Resource: Gateway Literal Text (Hindi)

License Information

Gateway Literal Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Literal Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Literal Text (Hindi)

John 1:1

1 आरम्भ में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन ही परमेश्वर था।

2 आरम्भ में वही परमेश्वर के साथ था।

3 उसी के माध्यम से सारी वस्तुएँ अस्तित्व में आईं, और अस्तित्व में आई हुई ऐसी एक भी वस्तु नहीं थी जो उसके बिना अस्तित्व में आई हो।

4 उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

5 और वह ज्योति अंधकार में चमकी, और अंधकार उस पर जयवंत नहीं हुआ।

6 एक मनुष्य था—जिसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था—उसका नाम यूहन्ना {था}।

7 वह एक साक्षी के रूप में आया ताकि ज्योति के विषय में गवाही दे, जिससे कि सब लोग उसके माध्यम से विश्वास करें।

8 वह ज्योति तो नहीं था, परन्तु इसलिए {आया} ताकि वह ज्योति के विषय में गवाही दे सके।

9 वह सच्ची ज्योति, जो सब मनुष्यों को प्रकाश प्रदान करती है, संसार में आनेवाली थी।

10 वह संसार में था, और उसी के माध्यम से संसार अस्तित्व में आया, और संसार ने उसे नहीं जाना।

11 वह {उसके} अपनों के पास आया, और {उसके} अपनों ने ही उसे ग्रहण नहीं किया।

12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उनको उसने परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार प्रदान किया, अर्थात जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया,।

13 ये लोग न तो लहू से, और न शरीर की इच्छा से, और न ही मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से जन्मे थे।

14 और वचन ने शरीर धारण किया और हमारे मध्य में वास किया, और हम ने उसकी महिमा का दर्शन किया, उस एकलौते के जैसी महिमा जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर पिता के पास से आता है।

15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी और पुकारकर कहा, "यह वही था जिसके बारे में मैंने बताया था कि 'जो मेरे बाद आने वाला है वह मुझ से बढ़कर है, क्योंकि वह मुझ से पहले था।'"

16 क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किया है।

17 क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी। अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा आए।

18 कभी भी किसी भी जन ने परमेश्वर को नहीं देखा है। केवल परमेश्वर के एकलौते ने, जो पिता की गोद में है, उसी ने {उसे} प्रकट किया है।

19 और यह यूहन्ना की गवाही है कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिए भेजा कि "तू कौन है?"

20 और उसने अंगीकार कर लिया—और उसने इन्कार नहीं किया, परन्तु मान लिया कि—"मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 और उन्होंने उससे पूछा, "तो फिर? क्या तू एलिय्याह है?" और उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "क्या तू भविष्यद्वक्ता है?" और उसने उत्तर दिया, "नहीं।"

22 फिर उन्होंने उससे कहा, "तू है कौन, ताकि जिन्होंने हमें भेजा है हम उनको कोई उत्तर दें? तू अपने बारे में क्या कहता है?"

23 उसने कहा, "मैं एक आवाज हूँ, जो उजाड़ में पुकारती है कि: 'प्रभु का मार्ग सीधा करो,' जिस प्रकार से यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था।"

24 और जिनको भेजा गया था वे फरीसियों की ओर से थे,

25 और उन्होंने उससे पूछा और उससे कहा, "यदि तू मसीह नहीं है और न एलिय्याह है और न भविष्यद्वक्ता है तो फिर तू बपतिस्मा क्यों देता है?"

26 यूहन्ना ने उनको यह कहकर उत्तर दिया, "मैं तो जल में बपतिस्मा देता हूँ। कोई जन तुम्हारे मध्य में खड़ा है जिसे तुम जानते नहीं हो,

27 वही जो मेरे बाद आता है, उसके सामने मैं इतना योग्य भी नहीं हूँ कि मैं उसके जूते की फीता खोल सकूँ।"

28 यह बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में घटित हुई थीं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा दे रहा था।

29 अगले दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते देखा और कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो संसार का पाप दूर करता है!

30 यही {वह} है जिसके बारे में मैंने कहा था, 'मेरे बाद एक व्यक्ति आएगा जो मुझ से बढ़कर हुआ है, क्योंकि वह मुझ से पहले था।'

31 और मैं उसे नहीं जानता था, परन्तु ऐसा इसलिए था कि मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया ताकि वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए।"

32 और यूहन्ना ने यह कहकर गवाही दी, "मैंने एक आत्मा को स्वर्ग से कबूतर के समान उतरते देखा, और वह उस पर ठहर गया।

33 और मैंने उसने नहीं पहचाना, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा था, उसी ने मुझ से कहा, 'जिस किसी पर भी तू आत्मा को उतरते और उस पर ठहरते हुए देखे, तो वही है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।'

34 और मैंने देखा और गवाही दी कि यही परमेश्वर का पुत्र है।"

35 अगले दिन, यूहन्ना फिर से अपने दो चेलों के साथ खड़ा हुआ था,

36 और यीशु को समीप से जाते हुए देखकर, उसने कहा, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना!"

37 और उसके दोनों चेलों ने उसे यह कहते हुए सुना, और वे यीशु के पीछे हो लिए।

38 परन्तु यीशु मुड़ा और उनको अपने पीछे आते हुए देखकर, उनसे कहा, "तुम क्या ढूँढ़ते हो?" और उन्होंने उससे कहा, "हे रब्बी (जिसका अनुवाद किए जाने पर गुरु अर्थ होता है), तू कहाँ पर रह रहा है?"

39 उसने उनसे कहा, "आओ और देख लो।" तब वे आए और देखा कि वह कहाँ रह रहा था, और उस दिन वे उसके साथ ही रुक गए। दसवाँ घंटा होने ही वाला था।

40 उन दोनों में से एक जिन्होंने यूहन्ना को कहते सुना और फिर उसके पीछे हो लिए, शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था।

41 उसे सबसे पहले {उसका} अपना भाई शमौन मिला और वह उससे कहता है, "हम को मसीह मिल गया है" (जिसका अनुवाद "ख्रीस्त" किया गया है)।

42 वह उसे यीशु के पास लेकर आया। यीशु ने उस पर दृष्टि डालकर कहा, “तू यूहन्ना का पुत्र, शमौन है। तू कैफा कहलाएगा” (जिसका अनुवाद “पतरस” किया गया है)।

43 अगले दिन यीशु गलील को जाना चाहता था, और उसे फिलिप्पुस मिला और वह उससे कहता है, “मेरे पीछे हो ले।”

44 अब फिलिप्पुस बैतसैदा से था, जो अन्द्रियास और पतरस का शहर था।

45 फिलिप्पुस को नतनएल मिला और वह उससे कहता है, “जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में, और भविष्यद्वक्ताओं ने भी लिखा है, वह हमें मिल गया है—नासरत से, यूसुफ का पुत्र यीशु।”

46 और नतनएल ने उससे कहा, “क्या कोई भी अच्छी वस्तु नासरत की हो सकती है?” फिलिप्पुस ने उससे कहता है, “आ और देख ले।”

47 यीशु ने नतनएल को अपनी तरफ आते हुए देखा और वह उसके विषय में कहता है, “देखो, एक सच्चा इस्राएली, जिसमें कोई छल नहीं है!”

48 नतनएल उससे कहता है, “तू मुझे कैसे जानता है?” यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था।”

49 नतनएल ने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है! तू इस्राएल का महाराजा है!”

50 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया और उससे कहा, “क्योंकि मैंने तुझ से कहा कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा था, क्या तू इसलिए विश्वास करता है? तू इससे भी बढ़कर कामों को देखेगा।”

51 और वह उससे कहता है, “मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि तू स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखेगा।”

John 2:1

1 और तीसरे दिन गलील के काना में एक विवाह था, और यीशु की माता भी वहाँ थी।

2 अब यीशु और उसके चेलों को भी उस विवाह में आमंत्रित किया गया था।

3 और दाखरस समाप्त होने पर, यीशु की माता उससे कहती है, “उनके पास दाखरस नहीं है।”

4 और यीशु उससे कहता है, “हे स्त्री, मेरा और तेरा क्या? मेरा समय अभी नहीं आया है।”

5 उसकी माता सेवकों से कहती है, “जो कुछ भी वह तुम से कहे, उसे कर देना।”

6 अब वहाँ यहूदियों के संस्कारिक शुद्धिकरण के लिए पत्थर के छः मटके खड़े थे जिनमें से प्रत्येक में दो या तीन मन समाता था।

7 यीशु उनसे कहता है, “उन मटकों को पानी से भर दो।” और उन्होंने उनको किनारे तक भर दिया।

8 और वह उनसे कहता है, “अब निकालो और उसे मुख्य परिचारक के पास लेकर जाओ।” और वे उसे ले गए।

9 परन्तु जब मुख्य परिचारक ने उस पानी को चखा जो दाखरस बना गया था (और वह नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया था, परन्तु वे सेवक—जिन्होंने पानी निकाला था—जानते थे), तो मुख्य परिचारक दुल्हे को बुलाता है

10 और उससे कहता है, “हर व्यक्ति पहले तो अच्छा दाखरस परोसता है, और ओछा दाखरस तब देता है जब वे नशे में चूर हो जाते हैं। तूने तो अच्छा दाखरस अब तक रखा हुआ है।”

11 चिन्हों के इस आरम्भ को यीशु ने गलील के काना में किया, और उसने अपनी महिमा प्रकट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

12 इसके बाद वह और उसकी माता और भाई और उसके चेले नीचे कफरनहूम को गए, और वे अधिक दिन वहाँ नहीं रहे।

13 और यहूदियों का फसह का पर्व निकट था, और यीशु ऊपर यरूशलेम को गया।

14 और उसने मंदिर में बैल और भेड़ और कबूतर बेचने वालों को पाया, तथा मुद्रा बदलने वाले वहाँ पर बैठे हुए थे।

15 और रस्सियों से एक कोड़ा बनाकर, उसने उन सब को, और भेड़ों को और बैलों को मंदिर से बाहर निकाल दिया, और उसने मुद्रा बदलने वालों के सिक्कों को बिखेर दिया और उनकी मेजों को उखाड़ फेंका।

16 और कबूतर बेचने वालों से, उसने कहा, "इन वस्तुओं को यहाँ से दूर ले जाओ। मेरे पिता के घर को व्यापार का घर मत बनाओ।"

17 उसके चेलों को स्मरण आया कि यह लिखा हुआ है, "तेरे घर की धुन मुझे भस्म कर देगी।"

18 फिर यहूदियों ने प्रतिक्रिया दिखाई और उससे कहा, "चूँकि तू इन कामों को कर रहा है, तो तू हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?"

19 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया और उनसे कहा, "इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिन में मैं इसे खड़ा कर दूँगा।"

20 तब यहूदियों ने कहा, "इस मंदिर का निर्माण छियालीस वर्षों में हुआ था, और तू इसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?"

21 परन्तु वह अपनी देह के मंदिर के विषय में कह रहा था।

22 इसलिए, जब वह मृतकों में से जी उठा था, तब उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने यह कहा था, और उन्होंने पवित्रशास्त्र पर और इस वचन पर जो यीशु ने बोला था विश्वास किया।

23 अब जिस सयम पर वह यरूशलेम में फसह के पर्व में था, तो उन चिन्हों को देखकर जो वह कर रहा था बहुतों ने उसके नाम पर विश्वास किया।

24 परन्तु स्वयं यीशु ने अपने आप के लिए उन पर भरोसा नहीं किया, क्योंकि वह सब मनुष्यों को जानता था

25 और क्योंकि उसे आवश्यकता नहीं थी कि मनुष्य के बारे में कोई जन उसे गवाही दे, क्योंकि वह स्वयं जानता था कि मनुष्य के भीतर क्या था।

John 3:1

1 अब वहाँ फरीसियों में से एक मनुष्य था जिसका नाम नीकुदेमुस {था}, वह यहूदियों का शासक था।

2 वह रात के समय उसके पास आया और उससे कहा, "हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू गुरु के रूप में परमेश्वर की ओर से आया है, क्योंकि कोई भी जन इन चिन्हों को प्रकट नहीं कर सकता जिनको तू करता है जब तक कि परमेश्वर उसके साथ न हो।"

3 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया और उससे कहा, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक कोई जन फिर से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता।"

4 नीकुदेमुस उससे कहता है, "बूढ़ा हो जाने पर, कोई मनुष्य कैसे जन्म ले सकता है? वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म नहीं ले सकता, क्या वह कर सकता है?"

5 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक कोई व्यक्ति जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं सकता।

6 जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।

7 अचम्भित न हो कि मैंने तुझ से कहा कि 'तुझे फिर से जन्म लेना आवश्यक है।'

8 हवा जहाँ कहीं भी चाहती है उधर बहती है, और तू उसकी
आवाज सुनता तो है, परन्तु तू नहीं जानता कि वह कहाँ से
आती है या वह कहाँ जा रही है। वैसा ही वह हर एक जन है
जो आत्मा से जन्मा है।"

9 नीकुदेमुस ने प्रतिउत्तर दिया और उससे कहा, "यह बातें
कैसे घटित हो सकती हैं?"

10 यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "क्या तू इस्राएलियों
का गुरु है, और तो भी तू इन बातों को नहीं समझता?

11 मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, कि हम वही बोलते हैं जो हम
जानते हैं, और जो हम ने देखा है उसके विषय में हम गवाही
देते हैं, और तू हमारी गवाही को स्वीकार नहीं करता।

12 यदि मैंने तुझे पृथ्वी की बातों के विषय में बताया और तू
विश्वास नहीं करता, तो यदि मैं तुझे स्वर्गीय बातों के विषय में
बताऊँ तो तू कैसे विश्वास करेगा?

13 और कोई भी स्वर्ग पर नहीं चढ़ा उसके अलावा जो स्वर्ग से
उतरा अर्थात—मनुष्य का पुत्र।

14 और जैसे मूसा ने जंगल में सर्प को ऊँचे पर चढ़ाया था, उसी
प्रकार से मनुष्य के पुत्र को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाना
आवश्यक है

15 ताकि जितने उस पर विश्वास करें वे अनन्त जीवन पाएँ।

16 क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया, कि उसने
{अपना} एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई भी उस पर
विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।

17 क्योंकि परमेश्वर ने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा
ताकि वह संसार पर दंड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि
उसके द्वारा संसार का उद्धार हो।

18 जो उस पर विश्वास करता है उस पर दंड की आज्ञा नहीं
होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता उस पर पहले ही
दंड की आज्ञा इसलिए हो चुकी है क्योंकि उसने परमेश्वर के
एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।

John 3:1

19 अब न्याय यह है: कि ज्योति संसार में आई, और मनुष्यों ने
ज्योति के बजाए अंधकार से प्रेम किया, क्योंकि उनके काम
बुरे थे।

20 क्योंकि जो बुरे काम कर रहा है वह प्रत्येक जन ज्योति से
बैर करता है और ज्योति के पास इसलिए नहीं आता, ताकि
उसके काम उजागर न हो जाएँ।

21 परन्तु जो सच्चे काम करता है वह ज्योति के पास इसलिए
आता है, ताकि उसके काम प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दें, कि
उनको परमेश्वर में होकर किया गया है।"

22 इन बातों के बाद, यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में
चले गए, और वहाँ वह उनके साथ रहा और बपतिस्मा देने
लगा।

23 अब सालेम के निकट ऐनोन में यूहन्ना भी इसलिए बपतिस्मा
दे रहा था, क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग उसके पास
आ रहे थे और बपतिस्मा ले रहे थे—

24 क्योंकि यूहन्ना को अभी तक बंदीगृह में नहीं डाला गया था।

25 तब वहाँ एक यहूदी के साथ यूहन्ना के चेलों का संस्कारिक
शुद्धिकरण के विषय में विवाद हुआ।

26 और वे यूहन्ना के पास गए और उससे कहा, "हे रब्बी, जो
व्यक्ति यरदन नदी की दूसरी तरफ तेरे साथ था, जिसके विषय
में तूने गवाही दी थी, देख, वह बपतिस्मा दे रहा है, और वे सब
उसके पास जा रहे हैं।"

27 यूहन्ना ने प्रतिउत्तर दिया और कहा, "कोई व्यक्ति किसी भी
वस्तु को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता तब तक कि वह उसे
स्वर्ग से प्रदान न की गई हो।

28 तुम स्वयं मेरी गवाही दे सकते हो कि मैंने कहा था, 'मैं
मसीह नहीं हूँ,' परन्तु, 'मुझे उसके आगे भेजा गया है।'

29 दुल्हा वही है जिसके पास दुल्हन है। परन्तु दुल्हे का मित्र,
जो खड़ा होकर उसकी सुनता है, दुल्हे की वाणी के कारण

अत्यन्त आनन्दित होता है। अतः, मेरा यह आनन्द पूरा हो गया है।

30 उसका बढ़ना, परन्तु मेरा घटना आवश्यक है।

31 जो ऊपर से आता है वह सब वस्तुओं से बढ़कर है। जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है और पृथ्वी की बातें बोलता है। जो स्वर्ग से आता है वह सब वस्तुओं से बढ़कर है।

32 जो उसने देखा और सुना वह उसके विषय में गवाही देता है, परन्तु कोई भी उसकी गवाही को ग्रहण नहीं करता।

33 जिसने उसकी गवाही ग्रहण की उसने अपनी मुहर लगा दी है कि परमेश्वर सच्चा है।

34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है वह परमेश्वर की बातें बोलता है। क्योंकि वह आत्मा नापकर नहीं देता।

35 पिता पुत्र से प्रेम करता है और इसलिए उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं।

36 जो पुत्र पर विश्वास करे उसे अनन्त जीवन प्राप्त होगा, परन्तु जो पुत्र की अवज्ञा करे वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है।"

John 4:1

1 फिर जब यीशु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना था कि यीशु यूहन्ना की तुलना में अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा दे रहा है

2 (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं, परन्तु उसके चेले बपतिस्मा दे रहे थे),

3 तो उसने यहूदिया को छोड़ दिया और फिर से वापस गलील को चला गया।

4 अब उसके लिए सामरिया से होकर जाना आवश्यक था।

5 तब वह सूखार नामक, सामरिया के एक नगर के निकट आया, जो उस भूमि के टुकड़े के समीप है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6 अब याकूब का कुआँ भी वहीं था। फिर यीशु, अपनी यात्रा से थका हुआ, उस कुएँ के बिलकुल बगल में बैठा हुआ था। यह लगभग छठे घंटे का समय था।

7 सामरिया की एक स्त्री जल भरने को आई। यीशु उससे कहता है, "मुझे पीने के लिए पानी दे।"

8 क्योंकि उसके चेले नगर में इसलिए चले गए थे ताकि वे भोजन खरीद सकें।

9 तब वह सामरी स्त्री उससे कहती है, "तू, एक यहूदी होकर, मुझ सामरी स्त्री से, पीने के लिए पानी क्यों माँगता है?" (क्योंकि सामरियों के साथ यहूदी लोग कोई व्यवहार नहीं रखते थे।)

10 यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, कि वह कौन है जो तुझ से कह रहा है 'मुझे पीने के लिए पानी दे,' तो तू उससे माँगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।"

11 वह स्त्री उससे कहती है, "हे महोदय, तेरे पास न तो कोई बरतन है और यह कुआँ भी गहरा है। फिर तेरे पास जीवन का जल कहाँ से आया?

12 तू हमारे पिता याकूब से बढ़कर तो नहीं है, क्या तू है, जिसने हमें यह कुआँ दिया और स्वयं उसने, और उसके पुत्रों ने और उसके पशुओं ने भी इससे पिया?"

13 यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "हर एक जन जो इस पानी में से पीता है वह फिर से प्यासा होगा,

14 परन्तु जो कोई भी उस जल में से पीए जो मैं उसे दूँगा वह फिर कभी अनन्तकाल तक के लिए प्यासा नहीं होगा। बजाए इसके, जो जल मैं उसे दूँगा वह उसमें से पानी को झरना बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।"

15 वह स्त्री उससे कहती है, “हे महोदय, यह जल मुझे दे ताकि
मैं प्यासी न होऊँ और जल भरने के लिए मुझे यहाँ आना न
पड़े।”

16 वह उससे कहता है, “जाकर अपने पति को बुला ले, और
यहाँ आ।”

17 उस स्त्री ने उत्तर दिया और उससे कहा, “मेरा कोई पति
नहीं है।” यीशु उससे कहता है, “तूने ठीक कहा, ‘मेरा कोई
पति नहीं है,’

18 क्योंकि तूने पाँच पति किए हैं, और इस समय जो तेरे पास
है वह भी तेरा पति नहीं है। यह जो तूने कहा सत्य ही है।”

19 वह स्त्री उससे कहती है, “हे महोदय, मुझे लगता है कि तू
कोई भविष्यद्वक्ता है।

20 हमारे पूर्वजों ने इस पहाड़ पर आराधना की, परन्तु तू कहता
है कि जहाँ आराधना करना आवश्यक है वह स्थान यरूशलेम
में है।”

21 यीशु उससे कहता है, “हे स्त्री, मेरा विश्वास कर, कि ऐसा
समय आ रहा है कि जब तुम न तो इस पहाड़ पर और न ही
यरूशलेम में पिता की आराधना करोगे।

22 तुम उसकी आराधना करते हो जिसे तुम जानते नहीं। हम
उसकी आराधना करते हैं जिसे हम जानते हैं, क्योंकि उद्धार
यहूदियों में से है।

23 हालाँकि, वह समय आ रहा है, और अभी है, जब सच्चे
आराधक पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई में होकर
करेंगे, क्योंकि पिता भी ऐसे लोगों की खोज कर रहा है जो
उसकी आराधना कर रहे हैं।

24 परमेश्वर आत्मा है, और जो उसकी आराधना कर रहे हैं, उन
लोगों को आत्मा और सच्चाई में होकर आराधना करना
आवश्यक है।

John 4:1

25 वह स्त्री उससे कहती है, “मैं जानती हूँ कि मसीह आने वाला
है (वही जिसे ख्रीस्त कहते हैं)। जब वह आएगा, तो वह हम से
सब बातों का वर्णन करेगा।”

26 यीशु उससे कहता है, “मैं वही हूँ, जो तुझ से बातें कर रहा
है।”

27 और इतने में, उसके चेले आ गए, और वे अचम्भित थे कि
वह एक स्त्री से बातें कर रहा था। फिर भी, किसी ने नहीं कहा,
“तू क्या ढूँढ़ रहा है?” या “तू उससे बातें क्यों कर रहा है?”

28 फिर वह स्त्री अपना पानी का मटका छोड़कर वापस नगर
में चली गई, और लोगों से कहती है,

29 “आओ, एक व्यक्ति को देखो जिसने मुझे वह सारी बातें
बता दीं, जो-जो मैंने की थीं। यह मसीह तो नहीं है, क्या यह
है?”

30 वे नगर से निकलकर उसके पास आए।

31 इसी बीच में, चेले उससे यह कहकर आग्रह कर रहे थे, “हे
रब्बी, खा ले।”

32 परन्तु उसने उनसे कहा, “मेरे पास खाने के लिए जो भोजन
है उसके बारे में तुम नहीं जानते।”

33 इसलिए चेलों ने एक-दूसरे से कहा, “कोई भी उसके पास
खाने को कुछ लेकर नहीं आया है, क्या वे लाए हैं?”

34 यीशु उनसे कहता है, “मेरा भोजन यह है कि मैं उसकी
इच्छा का पालन करूँ जिसने मुझे भेजा है और उसके काम
को पूरा करूँ।

35 क्या तुम ही नहीं कहते हो, ‘अभी चार महीने और पड़े हैं,
और फिर कटाई का समय आएगा’? देखो, मैं तुम से कहता
हूँ, कि अपनी आँखों को उठाकर खेतों को देखो, क्योंकि वे
पहले से ही कटनी के लिए सफेद हो चुके हैं!

36 जो कटाई कर रहा है वह मजदूरी पाता है और अनन्त
जीवन के लिए फल जमा करता है, ताकि वह जो बोता है और
वह जो काटता है मिलकर आनन्द करें।

37 क्योंकि इसमें वह कहावत सच होती है, 'एक जन बोनेवाला
है, और दूसरा, काटनेवाला है।'

38 मैंने तुम को उसकी कटाई करने के लिए भेजा जिसके लिए
तुम ने मेहनत नहीं की। दूसरों ने मेहनत की, और तुम ने
उनकी मेहनत में भागीदारी कर ली।

39 अब उस नगर के रहने वाले बहुत से सामरियों ने उस स्त्री
की खबर के कारण उस पर विश्वास किया, जो गवाही दे रही
थी, "उसने मुझे वह सब कुछ बता दिया जो मैंने किया था।"

40 अतः जब वे सामरिया के निवासी उसके पास आए, तो
उन्होंने उससे उनके पास रुकने की विनती की, और वह वहाँ
दो दिन तक रहा।

41 और उसके वचन के कारण और भी बहुतों ने विश्वास
किया।

42 और उन्होंने उस स्त्री से कहा, "जो तूने कहा था अब हम
केवल उसके कारण ही विश्वास नहीं करते, क्योंकि हम ने स्वयं
ही सुन लिया है, और हम जानते हैं कि यही सचमुच में संसार
का उद्धारकर्ता है।"

43 अब उन दो दिनों के बाद, वह वहाँ से गलील में चला गया।

44 क्योंकि यीशु ने स्वयं ही गवाही दी थी कि भविष्यद्वक्ता को
{अपने} स्वयं के देश में सम्मान नहीं मिलता।

45 इसलिए जब वह गलील में आया, तो गलीलवासियों ने
उसका स्वागत किया। उन्होंने उन सब कामों को देखा था जो
उसने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, क्योंकि वे भी पर्व में
गए थे।

46 तब वह फिर से गलील के काना में आया, जहाँ उसने पानी
को दाखरस बनाया था, और वहाँ एक राजसी अधिकारी था
जिसका पुत्र कफरनहूम में बीमार था।

47 यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आया है, वह
उसके पास गया और विनती की कि वह नीचे आए और उसके
पुत्र को चंगा कर दे, क्योंकि वह मरने पर था।

48 तब यीशु ने उससे कहा, "जब तक तुम चिन्हों और
आश्चर्यकर्मों को न देख लो, तब तक तुम विश्वास न करोगे।"

49 वह राजसी अधिकारी उससे कहता है, "हे महोदय, मेरे
बालक की मृत्यु होने से पहले नीचे चल।"

50 यीशु उससे कहता है, "जा। तेरा पुत्र जीवित है।" उस व्यक्ति
ने उस वचन पर विश्वास किया जो यीशु ने उससे कहा था, और
वह चला गया।

51 अब जिस समय वह नीचे जा ही रहा था, उसके दास उससे
आ मिले और यह कहकर उसे खबर दी कि उसका पुत्र
जीवित है।

52 अतः उसने उनसे उस घंटे के बारे में पूछा जिसमें उसमें
सुधार होने लगा था। अतः, उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, "कल
सातवें घंटे में उसका बुखार उतर गया था।"

53 तब उस पिता ने जान लिया कि यह उसी घंटे में हुआ था
जिसमें यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र जीवित है।" और स्वयं
उसने तथा उसके सारे घराने ने विश्वास किया।

54 अब यहूदिया से निकल कर गलील में आने के बाद, यीशु ने
फिर से यह दूसरा चिन्ह प्रकट किया था।

John 5:1

1 इन बातों के बाद, एक यहूदी पर्व आया, और यीशु ऊपर
यरूशलेम को गया।

2 अब यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास, पाँच छत वाले
ओसारों का एक कुंड है, जिसे इब्रानी में बैतहसदा कहा जाता
है।

3 उनमें बड़ी संख्या में ऐसे लोग पड़े रहते थे जो बीमार, अंधे, लंगड़े, {या} लकवे से ग्रस्त थे।

4 [क्योंकि प्रभु का एक स्वर्गदूत निश्चित समयों पर कुण्ड में नीचे आता था और पानी को हिलाया करता था, {और} जब पानी हिल रहा होता था तब जो कोई भी उसमें सबसे पहले उतर जाता था तो चाहे जिस किसी भी बीमारी से वह ग्रसित हो वह उससे चंगा हो जाता था।]

5 अब वहाँ एक मनुष्य था जो 38 वर्ष से अपनी बीमारी में था।

6 उसे वहाँ पड़ा हुआ देखकर, और यह जानकर कि वह वहाँ बहुत समय से पड़ा था, यीशु उससे कहता है, "क्या तू स्वस्थ होना चाहता है?"

7 उस बीमार मनुष्य ने उसे प्रतिउत्तर दिया, "हे महोदय, मेरा पास कोई ऐसा जन नहीं है जो कि मुझे कुंड में उस समय उतार दे, जब पानी हिलाया जाता हैI परन्तु मेरे उसमें जाते-जाते ही, कोई दूसरा मुझ से पहले उतर जाता है।"

8 यीशु उससे कहता है, "खड़ा हो, अपनी चटाई उठा, और चल फिर।"

9 और तुरन्त ही वह मनुष्य चंगा हो गया, और उसने अपनी चटाई उठा ली और चलने फिरने लगा। अब वह सब्त का दिन था।

10 इसलिए जो चंगा हो गया था उससे यहूदियों ने कहा, "यह सब्त का दिन है और तुझे अपनी चटाई उठाने की अनुमति नहीं है।"

11 परन्तु उसने उनको प्रतिउत्तर दिया, "जिसने मुझे स्वस्थ किया, उसी ने मुझ से कहा, 'अपनी चटाई उठा और चल फिर।'"

12 उन्होंने उससे पूछा, "वह मनुष्य कौन है जिसने तुझ से कहा था कि 'इसे उठा और चल फिर'?"

13 परन्तु जो चंगा हुआ था वह नहीं जानता था कि वह कौन था, क्योंकि उस स्थान में भीड़ होने के कारण यीशु गुप्त रूप से निकल कर चला गया था।

14 इन बातों के बाद, वह मनुष्य यीशु को मंदिर में मिला और उससे कहा, "देख, तू स्वस्थ हो गया है! इसके बाद पाप मत करना, जिससे कि तेरे साथ कुछ अधिक बुरा घटित न हो।"

15 वह मनुष्य चला गया और यहूदियों को बता दिया कि जिसने उसे स्वस्थ किया वह यीशु था।

16 और इसके कारण, यहूदियों ने यीशु को इसलिए सताना आरम्भ कर दिया, क्योंकि वह सब्त के दिन इन कामों को कर रहा था।

17 परन्तु उसने उनको प्रतिउत्तर दिया, "मेरा पिता अभी भी काम कर रहा है, और मैं भी काम कर रहा हूँ।"

18 अतः, इस कारण से, यहूदियों ने उसकी हत्या करने का और भी अधिक प्रयास किया, क्योंकि वह केवल सब्त को ही नहीं तोड़ रहा था, परन्तु स्वयं को परमेश्वर के बराबर बनाते हुए, परमेश्वर को {अपना} पिता भी कह रहा था।

19 इसलिए यीशु ने उत्तर देकर उनसे कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि पुत्र अपने आप से कुछ भी नहीं कर सकता है, केवल उसके अलावा जो वह अपने पिता को करते हुए देखे, क्योंकि जो कुछ भी वह करे, उन्हीं कामों को पुत्र भी उसी रीति से करता है।

20 क्योंकि पिता पुत्र से प्रेम करता है और जिन कामों को वह स्वयं करता है उन कामों को वह उस पर प्रकट करता है, और वह उसे इनसे भी बड़े-बड़े कामों को दिखाएगा ताकि तुम अचम्भित हो जाओ।

21 क्योंकि जैसे पिता मरे हुओं को उठाता है और उनको जीवन करता है, वैसे ही पुत्र भी जिसको वह चाहता है जीवन प्रदान करता है।

22 क्योंकि पिता तो किसी का भी न्याय नहीं करता, परन्तु उसने पुत्र को ही सारा न्याय का काम सौंपा हुआ है

23 ताकि सब लोग पुत्र का सम्मान वैसे ही करें जैसे वे पिता का
सम्मान करते हैं। जो कोई भी पुत्र का सम्मान नहीं करता वह
पिता का सम्मान भी नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो मेरे वचन सुनता है और
जिसने मुझे भेजा है उस पर विश्वास करता है वह अनन्त जीवन
पाता है और वह न्याय के अधीन नहीं आता, परन्तु वह मृत्यु से
पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

25 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि ऐसा समय आ रहा है, और
अभी है, जब मरे हुए परमेश्वर के पुत्र की वाणी सुनेंगे, और जो
सुनेंगे वे जीएँगे।

26 क्योंकि जिस प्रकार से पिता अपने में जीवन रखता है, वैसे
ही उसने पुत्र को भी सौंपा है कि अपने में जीवन रखे,

27 और उसने उसे न्याय करने का अधिकार प्रदान किया,
क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है।

28 इस पर अचम्भित न होना, क्योंकि ऐसा समय आ रहा है
जिसमें जो कब्रों में हैं वे सब उसकी वाणी को सुनेंगे

29 और बाहर निकल आएँगे—जितनों ने भले काम किए हैं वे
जीवन के पुनरुत्थान के लिए, और जितनों ने बुरे काम किए हैं
वे न्याय के पुनरुत्थान के लिए।

30 मैं स्वयं से कुछ भी नहीं कर सकता। जैसा मैं सुनता हूँ, वैसा
ही न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय धार्मिकता का इसलिए है
क्योंकि मैं अपनी इच्छा की नहीं परन्तु उसकी इच्छा की खोज
कर रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है।

31 यदि मैं अपने विषय में गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं
होगी।

32 यहाँ कोई अन्य भी है जो मेरे विषय में गवाही देता है, और
मैं जानता हूँ कि जो गवाही वह मेरे विषय में देता है वह सच्ची
है।

33 तुम ने यूहन्ना के पास लोगों को भेजा, और उसने सत्य की
गवाही दी।

34 परन्तु मैं मनुष्यों की गवाही को ग्रहण नहीं करता, परन्तु मैं
इन बातों को इसलिए कहता हूँ ताकि तुम उद्धार पाओ।

35 वह तो ऐसा दीपक था जो जल रहा था और चमक रहा था,
परन्तु एक घंटे के लिए तुम ने उसकी ज्योति में मगन होना
चाहा।

36 परन्तु मेरे पास वह गवाही है जो यूहन्ना की गवाही से बढ़कर
है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे सौंपे हैं ताकि मैं उनको पूरा
करूँ—वे वही काम हैं जिनको मैं करता हूँ—वे मेरे विषय में
गवाही देते हैं कि मुझे पिता ने भेजा है।

37 और पिता ने जिसने मुझे भेजा है स्वयं ही मेरे विषय में
गवाही दी है। तुम ने न तो उसकी वाणी को कभी सुना है और
न उसका रूप देखा है।

38 और तुम अपने भीतर उसके वचन को बनाए नहीं रखते,
क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते।

39 तुम पवित्रशास्त्र में इसलिए खोजते हो क्योंकि तुम सोचते
हो कि उसमें तुम को अनन्त जीवन मिलता है, और ये ही मेरे
विषय में गवाही देते हैं,

40 और तुम मेरे पास आने की इच्छा नहीं रखते जिससे कि तुम
को जीवन प्राप्त हो।

41 मैं मनुष्यों की बड़ाई को ग्रहण नहीं करता,

42 परन्तु मैं तुम को जानता हूँ, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं
है।

43 मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं
करते। यदि कोई अन्य {अपने ही} नाम से आए, तो तुम उसे
ग्रहण करते हो।

44 तुम जो एक दूसरे से बड़ाई चाहते हो, और उस बड़ाई की
खोज नहीं करते जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से आती है, तो
कैसे विश्वास कर सकते हो?

45 यह मत सोचो कि अपने पिता के सामने मैं स्वयं तुम पर दोष
लगाऊँगा। जो व्यक्ति तुम पर दोष लगा रहा है वह मूसा है,
जिस पर तुम ने अपनी आशा लगा रखी है।

46 क्योंकि यदि तुम ने मूसा पर विश्वास किया, तो तुम मुझ पर
भी विश्वास करोगे, क्योंकि उसने मेरे बारे में ही तो लिखा था।

47 परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई बातों पर विश्वास नहीं
करते, तो तुम मेरी बातों पर कैसे विश्वास करोगे?"

John 6:1

1 इन बातों के बाद, यीशु (तिबिरियास की) गलील की झील के
दूसरी तरफ चला गया।

2 अब एक बड़ी भीड़ उसके पीछे इसलिए चली आती थी
क्योंकि वह उन चिन्हों देख रहे थे जिनको वह उन पर कर रहा
था जो बीमार थे।

3 अब यीशु पहाड़ पर चढ़ गया और वहाँ वह अपने चेलों के
साथ बैठ गया।

4 (अब यहूदियों का फसह का पर्व निकट था।)

5 फिर यीशु, {अपनी} आँखों को उठाकर और एक बड़ी भीड़
को उसके पास आते देखकर, फिलिप्पुस से कहता है, "हम
रोटी कहाँ से खरीदें ताकि ये लोग खा सकें?"

6 (परन्तु उसने, उसकी जाँच करने के लिए यह कहा, क्योंकि
वह स्वयं जानता था कि वह क्या करने जा रहा है।)

7 फिलिप्पुस ने उसे उत्तर दिया, "दो सौ दीनार के मूल्य की
रोटी भी उनके लिए पर्याप्त नहीं होगी, कि उनमें से प्रत्येक को
थोड़ी-थोड़ी मिल जाए।"

8 उसके चेलों में से एक, शमौन पतरस का भाई, अन्द्रियास,
उससे कहता है,

9 "यहाँ एक छोटा लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ
और दो छोटी मछली हैं, परन्तु बहुत सारे लोगों के बीच में ये
क्या ही हैं?"

10 यीशु ने कहा, "लोगों को बैठा दो" (अब उस स्थान में बहुत
सारी घास थी।) अतः लोग बैठ गए, जो संख्या में लगभग पाँच
हजार पुरुष थे।

11 तब यीशु ने रोटियाँ लीं और धन्यवाद देकर, उसने वह
उनको दीं जो खाने के लिए बैठे हुए थे; उसी प्रकार से मछली
के साथ भी किया, जितना वे चाहते थे।

12 परन्तु जब वे तृप्त हो गए, तो वह अपने चेलों से कहता है,
"उन टूटे हुए टुकड़ों को इकट्ठा कर लो जो बच गए हैं, ताकि
कुछ भी न छूटे।"

13 इसलिए उन्होंने उनको इकट्ठा कर लिया और जौ की पाँच
रोटियों में से टूटे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भर लीं जिनको
खाने वालों के द्वारा छोड़ दिया गया था।

14 इसलिए, उसके द्वारा किए गए चिन्ह को देखकर, लोगों ने
कहा, "यह वास्तव में वही भविष्यद्वक्ता है जो संसार में आने
वाला है।"

15 तब यीशु, यह जानकर कि वे आकर उसे पकड़ने वाले हैं
ताकि वे उसे राजा बनाएँ, निकलकर फिर से पहाड़ पर
अकेला चला गया।

16 अब जब शाम हुई, तो उसके चेले उतरकर झील के पास
चले गए,

17 और एक नाव पर चढ़कर, वे समुद्र के पार कफरनहूम को
जा रहे थे, और उस समय तक अंधेरा हो गया था, परन्तु अभी
तक यीशु उनके पास नहीं आया था।

18 प्रचंड हवा चल रही थी, और समुद्र में उफान आने लगा था।

19 फिर, लगभग चार मील खे चुकने के बाद, वे यीशु को समुद्र
पर चलते हुए और नाव के पास आते देखते हैं, और वे डर गए।

20 परन्तु वह उनसे कहता है, “यह मैं हूँ! डरो नहीं।”

21 तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिए तैयार हुए, और तुरन्त ही वह नाव उस स्थान पर जा पहुँची जहाँ वे जा रहे थे।

22 अगले दिन, उस भीड़ ने जो समुद्र के दूसरी तरफ खड़ी हुई थी देखा कि वहाँ उस नाव के अलावा कोई अन्य नाव नहीं थी, और यह कि यीशु तो चेलों के साथ नाव पर नहीं चढ़ा था परन्तु उसके चेले अकेले ही चले गए थे।

23 अन्य नावें तिबिरियास के समीप के उस स्थान से आई थीं जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटियाँ खाई थीं।

24 इसलिए, जब भीड़ ने देखा कि वहाँ न यीशु और न ही उसके चेले थे, तो वे स्वयं ही नावों पर चढ़ गए और यीशु को खोजते हुए कफरनहूम चले गए।

25 और समुद्र की दूसरी तरफ उनको उसके मिल जाने पर, उन्होंने उससे कहा, “हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?”

26 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया और कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम मुझे इसलिए नहीं खोजते, क्योंकि तुम ने चिन्ह देखे, परन्तु इस कारण से कि तुम ने रोटियाँ खाईं और तृप्त हुए थे।

27 उस भोजन के लिए काम मत करो जो नाश हो जाता है, परन्तु उस भोजन के लिए जो अनन्त जीवन तक बना रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र प्रदान तुम को प्रदान करेगा, क्योंकि परमेश्वर पिता ने उस पर अपनी छाप लगा दी है।”

28 तब उन्होंने उससे कहा, “तो हमें क्या करना चाहिए, ताकि हम भी परमेश्वर के कामों को करें?”

29 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया और उनसे कहा, “परमेश्वर का काम यह है: कि तुम उस जन पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।”

30 अतः उन्होंने उससे कहा, “तो फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है, ताकि हम देखें और तेरा विश्वास करें? तू कौन सा काम करेगा?

31 हमारे पूर्वजों ने उजाड़ में मन्ना खाया, जैसा कि लिखा है, ‘उसने उनको खाने के लिए स्वर्ग की रोटी दी।’”

32 तब यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम को स्वर्ग की रोटी नहीं दी थी, परन्तु मेरा पिता तुम को स्वर्ग की सच्ची रोटी देता है।

33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग से उतरती है और संसार को जीवन प्रदान करती है।”

34 अतः उन्होंने उससे कहा, “हे महोदय, हमें हमेशा यही रोटी दिया कर।”

35 यीशु ने उनसे कहा, “जीवन की रोटी मैं हूँ। जो मेरे पास आता है वह निश्चय ही भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है वह निश्चय ही कभी प्यासा न होगा।

36 परन्तु मैंने तुम को बता दिया कि तुम ने मुझे देखा और विश्वास नहीं करते।

37 हर एक जन जिसे पिता मुझे देता है वह मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आता है उसे निश्चय ही मैं बाहर नहीं निकालूँगा।

38 क्योंकि मैं स्वर्ग से इसलिए नहीं उतरा हूँ, कि अपनी इच्छा को पूरा करूँ, परन्तु उसकी इच्छा को जिसने मुझे भेजा है।

39 परन्तु जिसने मुझे भेजा है उसकी इच्छा यह है, कि मैं उन सब में से एक को भी न खोऊँ जिनको उसने मुझे दिया है, परन्तु अंतिम दिन में उसे जीवित कर दूँ।

40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि हर एक उस जन को अनन्त जीवन मिले जो पुत्र को देखता है और उस पर विश्वास करता है और अंतिम दिन में मैं उसे जीवित कर दूँगा।”

41 तब यहूदी उसके बारे में इसलिए बड़बड़ाने लगे क्योंकि उसने कहा था, “मैं वह रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी है।”

42 और उन्होंने कहा, “क्या यह यूसुफ का पुत्र, यीशु नहीं, जिसके पिता और माता को हम जानते हैं? फिर कैसे वह अब कहता है, ‘मैं स्वर्ग से उतरा हूँ’?”

43 यीशु ने प्रतिउत्तर दिया और उनसे कहा, “आपस में बड़बड़ाना बंद करो।

44 कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है उसे खींच नहीं लेता, और मैं उसे अंतिम दिन में जीवित करूँगा।

45 भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में यह लिखा है, ‘और हर एक जन को परमेश्वर के द्वारा सिखाया जाएगा।’ हर एक जन जिसने पिता की ओर से सुना है और सीखा है वह मेरे पास आता है।

46 किसी ने भी पिता को नहीं देखा, उसके अलावा जो पिता की ओर से आया है—उसी ने परमेश्वर को देखा है।

47 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो विश्वास करता है वह अनन्त जीवन पाता है।

48 जीवन की रोटी मैं हूँ।

49 तुम्हारे पूर्वजों ने उजाड़ में मन्ना खाया, और वे मर गए।

50 यह ऐसी रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, ताकि कोई व्यक्ति इसमें से खाए और न मरे।

51 वह जीवित रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से उतरी है। यदि कोई जन इस रोटी में से खाता है, तो वह सदा तक जीवित रहेगा। अब मेरा मांस भी वह रोटी है जिसे मैं संसार के जीवन के लिए दूँगा।”

52 तब यहूदियों ने आपस में यह कहकर बहस करना आरम्भ कर दिया, “यह व्यक्ति कैसे {अपना} मांस खाने के लिए हमें दे सकता है?”

53 इसलिए, यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लहू न पीयो, तब तक तुम में जीवन नहीं है।

54 जो कोई मेरा मांस खाता है और मेरा लहू पीता है वह अनन्त जीवन प्राप्त करता है, और अंतिम दिन में मैं उसे जीवित करूँगा।

55 क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है, और मेरा लहू सच्चा पेय है।

56 जो मेरा मांस खाता है और मेरा लहू पीता है वह मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें।

57 जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है, और पिता के कारण मैं जीवित हूँ, वैसे ही जो मुझे खाता है, वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा।

58 यही ऐसी रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, वैसी नहीं जो पूर्वजों ने खाई और मर गए। जो इस रोटी को खाता है वह सदा तक जीवित रहेगा।”

59 उसने यह बातें कफरनहूम में शिक्षा देते हुए, आराधनालय में कही थीं।

60 तब उसके बहुत से चेलों ने, यह सुनकर, कहा, “यह तो कठिन वचन है; इसे कौन सुन सकता है?”

61 परन्तु यीशु ने, अपने भीतर जानकर कि उसके चेले इस बारे में बड़बड़ा रहे थे, उनसे कहा, “क्या इससे तुम को ठेस पहुँचती है?

62 तब यदि तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते देखो जहाँ वह पहले था तो क्या होगा...?

63 यह आत्मा ही है जो जीवन देता है; शरीर से कुछ लाभ नहीं होता। जो बातें मैंने तुम से बोली हैं वे आत्मा हैं, और वे ही जीवन हैं।

64 परन्तु तुम में से कुछ हैं जो विश्वास नहीं करते।" क्योंकि यीशु आरम्भ से ही जानता था कि वे लोग कौन थे जो विश्वास नहीं करते और वह कौन था जो उसे धोखा देगा।

65 और उसने कहा, "इस कारण से, मैं तुम से कहता हूँ, कि कोई भी मेरे पास तब तक नहीं आ सकता जब तक कि यह पिता के द्वारा उसके लिए स्वीकृत न किया जाए।"

66 उस समय से, उसके कई चेले पीछे हट गए और आगे को उसके साथ नहीं चले।

67 इसलिए, यीशु ने उन बारहों से कहा, "क्या तुम भी चले जाना नहीं चाहते, क्या तुम चाहते हो?"

68 शमौन पतरस ने उसे उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? तेरे पास तो अनन्त जीवन की बातें हैं,

69 और हम ने विश्वास किया है और जान लिया है कि तू ही परमेश्वर का पवित्र जन है।"

70 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "क्या मैंने तुम, बारहों को नहीं चुना, और तुम में से एक जन शैतान है?"

71 अब वह शमौन इस्करियोती के {पुत्र}, यहूदा के विषय में बोल रहा था, क्योंकि बारहों में से, वही उसे धोखा देने जा रहा था।

John 7:1

1 और इन बातों के बाद, यीशु गलील में यात्रा करता रहा, क्योंकि उसने यहूदिया में इसलिए जाना नहीं चाहा, क्योंकि यहूदी उसकी हत्या करने की खोज में थे।

2 (अब यहूदियों का झोंपड़ियों का पर्व निकट था।)

3 तब उसके भाइयों ने उससे कहा, "इस स्थान से निकलकर यहूदिया को चला जा, ताकि तेरे चेले भी तेरे उन कामों को देख लें जिनको तू करता है।

4 क्योंकि कोई भी जन गुप्त में कुछ भी नहीं करता है और स्वयं को प्रकट में रखने की खोज करता है। यदि तू इन कामों को करता है, तो स्वयं को संसार पर प्रकट कर।"

5 क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे।

6 इसलिए यीशु उनसे कहता है, "मेरा समय अभी नहीं आया है, परन्तु तुम्हारा समय तो हमेशा से तैयार है।

7 यह संसार तुम से घृणा नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से इसलिए घृणा करता है क्योंकि मैं उसके विषय में गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं।

8 तुम ऊपर पर्व में जाओ; मैं अभी तो इस पर्व में नहीं जा रहा हूँ, क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ है।"

9 अब इन बातों को उनसे कहने के बाद, वह गलील में ही रह गया।

10 परन्तु जब उसके भाई ऊपर पर्व में चले गए, तब वह भी ऊपर गया, सार्वजनिक रूप से नहीं, परन्तु गुप्त में।

11 इसलिए, पर्व में यहूदी उसकी खोज कर रहे थे और कह रहे थे, "वह कहाँ है?"

12 और उसके बारे में भीड़ में बहुत बड़बड़ाना हो रहा था। कुछ कह रहे थे, "वह भला जन है।" परन्तु अन्य कह रहे थे, "नहीं, परन्तु वह भीड़ के लोगों को भटकाता है।"

13 हालाँकि, यहूदियों के भय के मारे कोई भी उसके बारे में खुले रूप से बात नहीं कर रहा था।

14 अब जिस समय पर्व आधा बीत गया था, तब ऊपर यीशु मंदिर में गया और शिक्षा देने लगा।

15 इसलिए, यहूदियों ने यह कहकर अचम्भा किया, "यह व्यक्ति बिना पढ़े-लिखे पवित्रशास्त्र को कैसे जानता है?"

16 तब यीशु ने उनको उत्तर दिया और कहा, “मेरी शिक्षा मेरी
नहीं है, परन्तु उसकी है जिसने मुझे भेजा है।

17 यदि कोई जन उसकी इच्छा का पालन करना चाहता है, तो
वह {इस} शिक्षा के बारे में जानता होगा, कि क्या यह परमेश्वर
की ओर से है, या फिर मैं अपनी तरफ से ही बोलता हूँ।

18 जो कोई भी अपनी तरफ से बोलता है वह {अपनी ही}
बड़ाई की खोज करता है, परन्तु जो कोई भी उसकी महिमा
की खोज करता है जिसने उसे भेजा है, तो वह व्यक्ति सच्चा
है, और उसमें कोई अधर्म नहीं।

19 क्या मूसा ने तुम को व्यवस्था नहीं दी? तब पर भी तुम में से
कोई भी उस व्यवस्था का पालन नहीं करता। तुम मेरी हत्या
करने की खोज में क्यों हो?”

20 भीड़ के लोगों ने उत्तर दिया, “तुझ में कोई दुष्टात्मा है। कौन
तेरी हत्या करने की खोज में है?”

21 यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, “मैंने एक काम किया,
और तुम सब ने अचम्भा किया।

22 इस कारण से, मूसा ने तुम को खतना दिया (ऐसा नहीं है कि
यह मूसा की ओर से है, परन्तु पूर्वजों की ओर से है), और सब्त
के दिन तुम किसी मनुष्य का खतना कर देते हो।

23 यदि कोई मनुष्य सब्त के दिन खतना ग्रहण करता है तो
उससे मूसा की व्यवस्था नहीं टूटती, तो तुम मुझ से इसलिए
क्रोधित क्यों हो क्योंकि मैंने एक मनुष्य को सब्त के दिन
पूर्णरूप से स्वस्थ कर दिया?

24 स्वरूप के अनुसार न्याय मत करो, परन्तु न्यायपूर्ण
धार्मिकता के साथ न्याय करो।”

25 तब उनमें से कुछ यरूशलेम के रहने वालों ने कहा, “क्या
यह वही नहीं जिसकी वे हत्या करने की खोज में हैं?

26 और देखो, वह तो खुले रूप से बोलता है, और वे उसे कुछ
भी नहीं कहते हैं। शासकों को वास्तव में नहीं पता कि यह
मसीह है, क्या उनको पता है?

27 परन्तु हम जानते है कि यह व्यक्ति कहाँ से आया है। परन्तु
जब मसीह आएगा, तो कोई भी नहीं जान पाएगा कि वह कहाँ
से आया है।”

28 तब यीशु मंदिर में शिक्षा देते हुए चिल्ला उठा, और कहने
लगा, “तुम मुझे जानते हो, और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ
से आया हूँ। और मैं स्वयं से नहीं आया हूँ, परन्तु जिसने मुझे
भेजा है वह सच्चा है, जिसे तुम नहीं जानते।

29 मैं उसे इसलिए जानता हूँ क्योंकि मैं उसके पास से आया हूँ
और उसने मुझे भेजा है।”

30 इसलिए, वे उसे बंदी बनाने की खोज में थे, परन्तु किसी ने
भी उस पर इसलिए हाथ नहीं डाला, क्योंकि उसका समय
अभी नहीं आया था।

31 परन्तु भीड़ में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, और वे
कह रहे थे, “जब मसीह आएगा, तो जितने काम इस व्यक्ति ने
किए हैं वह इनसे अधिक चिन्हों को प्रकट नहीं करेगा, क्या
वह करेगा?”

32 फरीसियों ने भीड़ को यीशु के बारे में इन बातों को
बड़बड़ाते हुए सुना, और प्रधान याजकों तथा फरीसियों ने
अधिकारियों को भेजा ताकि वे उसे बंदी बना लें।

33 इसलिए, यीशु ने कहा, “मैं अभी थोड़े समय के लिए तुम्हारे
साथ हूँ, और उसके बाद मैं उसके पास चला जाऊँगा जिसने
मुझे भेजा है।

34 तुम मुझे खोजोगे परन्तु तुम मुझे ढूँढ़ नहीं पाओगे, और जहाँ
मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ पाओगे।”

35 इसलिए यहूदियों ने आपस में कहा, “यह मनुष्य कहाँ जाने
वाला है कि हम उसे ढूँढ़ नहीं पाएँगे? कहीं यह जाकर
यूनानियों में तो नहीं मिल जाने वाला है, और यूनानियों को भी
शिक्षा देने वाला है, क्या वह ऐसा करने पर है?

36 यह क्या बात है जो उसने कही, ‘तुम मुझे खोजोगे परन्तु तुम
मुझे ढूँढ़ नहीं पाओगे, और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ
पाओगे’?”

37 परन्तु अंतिम दिन में, जो पर्व का मुख्य दिन था, यीशु खड़ा
हुआ, और चिल्लाकर कहने लगा, "यदि कोई प्यासा है, तो उसे
मेरे पास आने दो, और पीने दो।

38 जो मुझ पर विश्वास करता है, तो जिस प्रकार से पवित्रशास्त्र
कहता है, 'उसके पेट में से जीवन के पानी की नदियाँ बहने
लगेंगी।'"

39 (अब उसने यह आत्मा के विषय में कहा था, जिसे वे लोग
प्राप्त करने वाले थे जिन्होंने उस पर विश्वास किया था; क्योंकि
अभी तक आत्मा इसलिए नहीं था क्योंकि अभी तक यीशु का
महिमामंडन नहीं किया गया था।)

40 तब भीड़ में से कुछ लोगों ने, इन बातों को सुनकर, कहा,
"यह वास्तव में वही भविष्यद्वक्ता है।"

41 अन्यों ने कहा, "यह तो मसीह है।" परन्तु कुछ ने कहा,
"वास्तव में, मसीह गलील से नहीं आएगा, क्या वह आएगा?

42 क्या पवित्रशास्त्र नहीं कहता कि मसीह दाऊद के वंश से
और बैतलहम से आएगा, अर्थात उस गाँव से जहाँ दाऊद
रहता था?"

43 इसलिए वहाँ भीड़ के लोगों में उसके कारण एक विभाजन
घटित हो गया।

44 (अब उनमें से कुछ उसे बंदी बनाना चाहते थे, परन्तु किसी
ने भी उस पर हाथ नहीं डाले।)

45 फिर वे अधिकारी प्रधान याजकों और फरीसियों के पास
वापस आ गए, और उन्होंने उनसे कहा, "तुम उसे लेकर क्यों
नहीं आए?"

46 उन अधिकारियों ने उत्तर दिया, "किसी व्यक्ति ने कभी भी
इस प्रकार से बातें नहीं की हैं।"

47 इसलिए फरीसियों ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "कहीं तुम से
भी तो छल नहीं किया गया है, क्या तुम से किया गया है?

48 शासकों में से किसी ने भी, या फरीसियों में से किसी ने भी
उस पर विश्वास नहीं किया, क्या उन्होंने किया है?

49 परन्तु भीड़ के यह लोग जो व्यवस्था को नहीं जानते, वे
श्रापित हैं।"

50 नीकुदेमुस (जो पहले उसके पास आया था, और उन
फरीसियों में से एक था) उनसे कहता है,

51 "हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति का न्याय तब तक नहीं
करती जब तक कि पहले उसकी सुन न ले और जान न ले कि
वह क्या करता है, क्या वह करती है?"

52 उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, "क्या तू भी गलील का
रहने वाला नहीं है, क्या तू है? ढूँढ़ ले और देख ले कि गलील से
कोई भी भविष्यद्वक्ता नहीं उठा।"

53 [तब हर एक जन {अपने} घर को चला गया।

John 8:1

1 अब यीशु जैतून के पहाड़ पर चला गया।

2 अब सुबह में भोर को वह फिर से मंदिर में आया, और बाकी
सब लोग भी उसके पास आए।

3 अब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लेकर आए जो
व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उन्होंने उसे बीच में खड़ा कर
दिया।

4 उसके विरुद्ध दोष लगाने हेतु उसकी परीक्षा करने के लिए
याजक उससे कहते हैं, "हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार के कार्य में
पकड़ी गई है।

5 अब व्यवस्था में तो मूसा ने हमें ऐसे लोगों पर पत्थरवाह करने
का आदेश दिया है, परन्तु तू अभी क्या कहता है?"

6 परन्तु यीशु झुककर, {अपनी} उंगली से भूमि पर लिखने
लगा।

7 परन्तु जब वे उससे लगातार प्रश्न पूछते ही रहे, तो वह खड़ा हुआ और उनसे कहा, "तुम्हारे बीच में से जिस व्यक्ति ने पाप नहीं किया हो, वही उस पर पहला पत्थर फेंके।"

8 और फिर से, झुककर, उसने {अपनी} उंगली से भूमि पर लिखा।

9 परन्तु हर एक यहूदी, सबसे वृद्ध से आरम्भ करके वहाँ से निकल गए, अर्थात वे सब चले गए, और वह उस स्त्री के साथ अकेला रह गया जो बीच में खड़ी थी।

10 और यीशु ने, खड़े होकर, उस स्त्री से कहा, "वे कहाँ हैं? क्या किसी ने भी तुझे दंड नहीं दिया?"

11 और उसने उससे कहा, "हे प्रभु, किसी ने भी नहीं।" और उसने कहा, "और न ही मैं तुझे दंड देता हूँ। जा, अब से पाप मत करना।"]

12 तब यीशु ने उनसे यह कहकर फिर से बात की, "मैं संसार की ज्योति हूँ; जो मेरे पीछे चलता है वह निश्चय ही अंधकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।"

13 तब फरीसियों ने उससे कहा, "तू तो स्वयं अपनी गवाही देता है; तेरी गवाही सच्ची नहीं है।"

14 यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "यहाँ तक कि यदि मैं अपने बारे में गवाही भी दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और मैं कहाँ जा रहा हूँ, परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आया हूँ या मैं कहाँ जा रहा हूँ।

15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।

16 परन्तु यहाँ तक कि यदि मैं न्याय भी करूँ, तो मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं और पिता साथ हैं जिसने मुझे भेजा है।

17 परन्तु यहाँ तक कि तुम्हारी व्यवस्था में यह लिखा हुआ है कि दो मनुष्यों की गवाही सच्ची होती है।

18 एक मैं हूँ जो अपने बारे में गवाही देता है, और पिता जिसने मुझे भेजा है वह भी मेरे बारे में गवाही देता है।"

19 इसलिए, उन्होंने उससे कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु में उत्तर दिया, "तुम न मुझे जानते हो और न ही मेरे पिता को; यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो तुम मेरे पिता को भी जानते।"

20 यह बातें उसने मंदिर में शिक्षा देते समय भंडारगृह में कहीं, और किसी ने भी उसे इसलिए बंदी नहीं बनाया, क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

21 तब उसने फिर से उनसे कहा, "मैं जाता हूँ, और तुम मेरी खोज करोगे और अपने पापों में मर जाओगे। जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।"

22 तब यहूदियों ने कहा, "कहीं वह स्वयं की हत्या तो नहीं करेगा, क्या वह करेगा? क्या इसी कारण से वह कहता है, 'जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।'?"

23 और उसने उनसे कहा, "तुम नीचे की वस्तुओं के हो; मैं ऊपर की वस्तुओं का हूँ। तुम इस संसार के हो; मैं इस संसार का नहीं हूँ।

24 इसी कारण से, मैंने तुम से कहा था कि तुम अपने पापों में मरोगे। क्योंकि जब तक तुम विश्वास नहीं करते कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मरोगे।"

25 अतः, उन्होंने उससे कहा, "तू है कौन?" यीशु ने उनसे कहा, "जो मैं आरम्भ से ही जो तुम से कह रहा था।

26 मेरे पास तुम्हारे विषय में बोलने के लिए और न्याय करने के लिए बहुत सी बातें हैं। परन्तु जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है; और जो बातें मैंने उससे सुनी हैं, वही बातें मैं संसार से कहता हूँ।"

27 (वे समझ नहीं पाए कि वह उनसे पिता के बारे में बातें कर रहा था।)

28 तब यीशु ने उनसे कहा, “जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे
पर चढ़ाओगे, तब तुम जानोगे कि मैं वही हूँ, और यह कि मैं
स्वयं से कुछ भी नहीं करता। परन्तु जैसा पिता ने मुझे सिखाया
है, मैं इन बातों को बोलता हूँ।

29 और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला
इसलिए नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा वही करता हूँ जो उसे
प्रसन्न करता है।”

30 जब वह इन बातों को कह रहा था, तो बहुतों ने उस पर
विश्वास किया।

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से कहा जिन्होंने उस पर विश्वास
किया था, “यदि तुम मेरे वचन में बने रहो, तो तुम सच में मेरे
चेले हो;

32 और तुम सत्य को जानोगे, और वही सत्य तुम को स्वतंत्र
करेगा।”

33 उन्होंने उसे प्रतिउत्तर दिया, “हम तो अब्राहम के वंशज हैं
और कभी भी किसी के दास नहीं हुए हैं; तो तू कैसे कह सकता
है, ‘तुम स्वतंत्र किए जाओगे’?”

34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, “मैं तुम से सच-सच कहता हूँ
कि हर एक जन जो पाप करता है वह पाप का दास है।

35 अब दास तो घर में सदाकाल तक बना नहीं रहता; पुत्र
सदाकाल तक बना रहता है।

36 इसलिए, यदि पुत्र तुम को स्वतंत्र करता है, तो तुम वास्तव
में स्वतंत्र हो जाओगे।

37 मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंशज हो, परन्तु तुम मेरी
हत्या करने की खोज में इसलिए हो, क्योंकि तुम्हारे भीतर मेरे
वचन को कोई स्थान नहीं मिलता।

38 मैं वही बोलता हूँ जो मैंने मेरे पिता के साथ देखा है; और
इसी कारण से, तुम भी वही करते हो जो तुम अपने पिता से
सुनते हो।”

John 8:1

39 उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, “अब्राहम हमारा पिता
है।” यीशु उनसे कहता है, “यदि तुम अब्राहम की संतान होते,
तो तुम अब्राहम के कामों को भी करते।

40 परन्तु अब तुम मेरी हत्या करने की खोज में हो, अर्थात उस
मनुष्य की जिसने तुम को वह सत्य बताया जो मैंने परमेश्वर से
सुना है। अब्राहम ने तो ऐसा नहीं किया था।

41 तुम अपने पिता के कामों को ही करते हो।” फिर उन्होंने
उससे कहा, “हम ने यौन अनैतिकता में जन्म नहीं लिया;
हमारा एक ही पिता है: अर्थात परमेश्वर।”

42 यीशु ने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो
तुम मुझ से प्रेम करते, क्योंकि मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ
और यहाँ पर हूँ; क्योंकि मैं स्वयं से तो नहीं आया, परन्तु उसने
मुझे भेजा है।

43 किस कारण से तुम मेरी बातों को नहीं समझते? ऐसा
इसलिए है क्योंकि तुम मेरी बातों को सुन नहीं सकते।

44 तुम {तुम्हारे} पिता, शैतान की ओर से हो, और तुम अपने
पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से
ही हत्यारा था और सत्य में स्थिर इसलिए नहीं रहता, क्योंकि
उसमें कोई सत्य है ही नहीं। जब वह कोई झूठ बोले, तो वह
{अपनी} स्वयं की {प्रकृति} से ही बोलता है, क्योंकि वह तो
झूठा है और उसका पिता भी है।

45 परन्तु क्योंकि मैं सच बोलता हूँ, इसलिए तुम मेरा विश्वास
नहीं करते।

46 तुम में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है? यदि मैं सच
बोलता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते?

47 जो परमेश्वर से है वह परमेश्वर की बातों को सुनता है; इसी
कारण से तुम नहीं सुनते, क्योंकि तुम परमेश्वर से नहीं हो।”

48 यहूदियों ने उत्तर दिया और उससे कहा, “क्या हम सच ही
नहीं कहते कि तू एक समरी और तुझ में कोई दुष्टात्मा है?”

49 यीशु ने उत्तर दिया, “मुझ में कोई दुष्टात्मा नहीं है, परन्तु मैं अपने पिता का सम्मान करता हूँ, और तुम मेरा अपमान करते हो।

50 अब मैं अपनी महिमा की खोज नहीं करता; कोई है जो खोज करता है और न्याय करता है।

51 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे, तो निश्चय ही वह अनन्तकाल तक मृत्यु को नहीं देखेगा।”

52 यहूदियों ने उससे कहा, “अब हम जान गए हैं कि तुझ में दुष्टात्मा है। अब्राहम और भविष्यद्वक्ता तो मर गए; परन्तु तू कहता है, ‘यदि कोई मेरे वचन का पालन करे, तो निश्चय ही वह अनन्तकाल तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा।’

53 तू हमारे पिता अब्राहम से बढ़कर नहीं है जो मर गया, क्या तू है? भविष्यद्वक्ता भी मर गए। तू स्वयं को क्या ठहराता है?”

54 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं अपना महिमामंडन करूँ, तो मेरी महिमा कुछ भी नहीं; यह मेरा पिता ही है जो मेरा महिमामंडन करता है—जिसके विषय में तुम कहते हो, ‘वह तुम्हारा परमेश्वर है।’

55 और तुम ने उसे नहीं जाना, परन्तु मैं उसे जानता हूँ। और यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारे समान ही झूठा ठहरूँगा। हालाँकि, मैं उसे जानता हूँ और उसके वचन का पालन करता हूँ।

56 तुम्हारे पिता अब्राहम ने इसलिए आनन्द किया कि वह मेरे दिन को देखने पाएगा, और उसने इसे देखा और हर्षित हुआ।”

57 इसलिए यहूदियों ने उससे कहा, “तू तो अभी 50 वर्ष की आयु का भी नहीं है, और तूने अब्राहम को देखा है?”

58 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच-सच कहता है, इससे पहले कि अब्राहम अस्तित्व में आया, मैं हूँ।”

59 इस कारण, उन्होंने उस पर फेंकने के लिए पत्थर उठा लिए, परन्तु यीशु ने स्वयं को छिपा लिया और मंदिर से निकल गया।

John 9:1

1 और पास से होकर जाते हुए, उसने एक जन्म के अंधे मनुष्य को देखा।

2 और उसके चेलों ने यह कहकर उससे पूछा, “हे रब्बी, किसने पाप किया था, इस मनुष्य ने या इसके माता-पिता ने, जिससे कि यह अंधा जन्मा?”

3 यीशु ने उत्तर दिया, “न इस मनुष्य ने पाप किया था, और न ही इसके माता-पिता ने, परन्तु यह इसलिए है ताकि परमेश्वर के काम उसमें प्रकट हों।

4 जिसने मुझे भेजा है हमें उसके कामों को दिन के समय में ही करना आवश्यक है। वह रात आ रही है जब कोई भी काम करने में सक्षम नहीं होगा।

5 जब तक मैं संसार में हूँ, मैं संसार की ज्योति हूँ।”

6 यीशु के इन बातों को कहने के बाद, उसने भूमि पर थूका और लार से गारा बनाया, और उस गारे को, {उसकी} आँखों पर पोत दिया।

7 और उसने उससे कहा, “जा, शीलोह के कुंड में धो ले,” (जिसका अनुवाद ”भेजा हुआ” किया गया है)। अतः वह चला गया, और धोया, और देखता हुआ वापस आया।

8 तब उसके पड़ोसी और वे लोग जिन्होंने उसको पहले देखा था कि वह तो एक भिखारी था, कहने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठकर भीख माँगा करता था?”

9 कुछ ने कहा, “यह तो वही है।” अन्यों ने कहा, “बिलकुल भी नहीं, परन्तु यह उसके जैसा ही है।” वह लगातार कहता रहा, “मैं वही हूँ।”

10 अतः, उन्होंने उससे कहा, “तेरी आँखें कैसे खुल गईं?”

11 उसने उत्तर दिया, "वह मनुष्य जो यीशु कहलाता है उसने गारा बनाकर {उसे} मेरी आँखों पर पोत दिया और मुझ से कहा, 'शीलोह को जा और धो ले।' इसलिए मैं गया और धोकर, अपनी दृष्टि पाप्त कर ली।"

12 और उन्होंने उससे कहा, "वह कहाँ है?" उसने कहा, "मैं नहीं जानता।"

13 वे उसे, जो पहले अंधा था, फरीसियों के पास लेकर आए।

14 (अब वह सब्त का दिन था जब यीशु ने गारा बनाया और उसकी आँखों को खोला था।

15 तब फरीसी भी उससे फिर से पूछने लगे कि उसने दृष्टि कैसे प्राप्त की। परन्तु उसने उनसे कहा, "उसने मेरी आँखों पर गारा पोत दिया, और मैंने धोया, और अब मैं देखता हूँ।"

16 तब कुछ फरीसियों ने कहा, "यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह सब्त के दिन का पालन नहीं करता है।" अन्यों ने कहा, "कोई मनुष्य, जो पापी है, वह इन चिन्हों को कैसे प्रकट कर सकता है?" और वहाँ उनके बीच में विभाजन हो गया।

17 इस कारण से, उन्होंने उस अंधे मनुष्य से फिर से पूछा, "चूँकि उसने तेरी आँखें खोलीं, तो तू उसके बारे में क्या कहता है?" और उसने कहा, "वह एक भविष्यद्वक्ता है।"

18 अतः, यहूदियों ने उसके बारे में तब तक विश्वास नहीं किया कि वह अंधा था और उसने {अपनी} दृष्टि प्राप्त कर ली थी जब तक कि उन्होंने उसके माता-पिता को नहीं बुला लिया जिसने {अपनी} दृष्टि प्राप्त कर ली थी।

19 और उन्होंने उसके माता-पिता से यह कहकर पूछा, "क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा था? तो फिर अब वह कैसा देखता है?"

20 अतः उसके माता-पिता ने उत्तर दिया और कहा, "हम जानते हैं कि यह हमारा ही पुत्र है और यह कि वह अंधा जन्मा था।

21 परन्तु वह अब कैसे देखता है, यह हम नहीं जानते, या उसकी आँखों को किसने खोला, हम नहीं जानते। उसी से पूछ लो; वह तो पूरा सयाना है। वह अपने लिए स्वयं ही बोलेगा।"

22 उसके माता-पिता ने इन बातों को इसलिए कहा क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे। क्योंकि यहूदी पहले से ही सहमत हो गए थे कि यदि कोई भी उसका मसीह होना मान लेगा, तो उसे आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा।

23 इस कारण से, उसके माता-पिता ने कहा, "वह तो पूरा सयाना है; उसी से पूछ लो।"

24 इसलिए, दूसरी बार उन्होंने उस मनुष्य को बुलाया जो पहले अंधा था और उससे कहा, "परमेश्वर को महिमा दे। हम जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।"

25 तब उसने प्रतिउत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि वह कोई पापी है। मैं एक बात जानता हूँ: कि मैं अंधा था, अब देखता हूँ।"

26 फिर उन्होंने उससे कहा, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने तेरी आँखें कैसे खोलीं?"

27 उसने उनको उत्तर दिया, "मैंने तुम को पहले ही बता दिया है, और तुम ने नहीं सुना! तुम फिर से क्यों सुनना चाहते हो? कहीं तुम उसके चेले बनना तो नहीं चाहते हो, क्या तुम चाहते हो?

28 और उन्होंने उसे गालियाँ दीं और कहा, "तू ही उसका चेला है, परन्तु हम तो मूसा के चेले हैं।

29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं, परन्तु हम तो यह भी नहीं जानते कि यह मनुष्य कहाँ का रहनेवाला है।"

30 उस मनुष्य ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "अब यह तो अनूठी बात है, कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का रहनेवाला है, और तब पर भी उसने मेरी आँखें खोल दीं।

31 हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता, परन्तु
यदि कोई जन भक्त हो और उसकी इच्छा का पालन करता
हो, तो वह उसकी सुनता है।

32 अनन्तकाल से ऐसा कभी नहीं सुना गया है कि किसी जन
ने अंधे जन्मे मनुष्य की आँखें खोल दी हों।

33 यदि यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं होता, तो वह कुछ
भी करने में सक्षम नहीं होता।"

34 उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, "तू तो पूरी तरह से
पापों में जन्मा था, और तू हमें शिक्षा दे रहा है?" और उन्होंने
उसे बाहर निकाल दिया।

35 यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया, और उसे
ढूँढ़कर, उसने कहा, "क्या तू मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता
है?"

36 उसने प्रतिउत्तर दिया और कहा, "और हे महोदय, वह कौन
है, कि मैं उस पर विश्वास करूँ?"

37 यीशु ने उससे कहा, "तूने उसे देखा है, और यह वही है जो
तुझ से बातें कर रहा है।"

38 अब उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ" और उसने
उसे दंडवत् किया।

39 और यीशु ने कहा, "मैं इस संसार में न्याय करने के लिए
आया हूँ, ताकि जो देखते नहीं वे देखें और जो देखते हैं वे अंधे
हो जाएँ।"

40 {कुछ} फरीसी जो उसके साथ थे उन्होंने इन बातों को
सुनकर उससे पूछा, "हम भी तो अंधे नहीं हैं, क्या हम हैं?"

41 यीशु ने उनसे कहा, "यदि तुम अंधे होते, तो पाप नहीं करते,
परन्तु अब तुम कहते हो कि 'हम देखते हैं।' इसलिए तुम्हारा
पाप बना रहता है।"

John 10:1

1 "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो द्वार से होकर भेड़शाला
में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी अन्य रीति से चढ़ आता है,
वह चोर और डाकू है।

2 परन्तु जो द्वार से होकर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा
है।

3 द्वारपाल उसके लिए द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसकी
वाणी सुनती हैं, और वह {अपनी} भेड़ों को नाम से पुकारता है
और उनको बाहर ले जाता है।

4 जब वह {अपनी} भेड़ों को बाहर निकाल लेता है, तो वह
उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे चलती
हैं, क्योंकि वे उसकी वाणी को पहचानती हैं।

5 अब वे निश्चय ही किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी, परन्तु
वे उसके पास से भाग जाएँगी, क्योंकि वे अजनबियों की वाणी
को नहीं पहचानती हैं।"

6 यीशु ने उनसे यह दृष्टांत कहा, परन्तु वे समझे नहीं कि वह
क्या था जो वह उनसे कह रहा था।

7 इसलिए, फिर से यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच-सच
कहता हूँ, कि मैं भेड़ों का द्वार हूँ।

8 हर एक जन जो मुझ से पहले आया वह चोर और डाकू है,
परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनीं।

9 मैं द्वार हूँ। यदि कोई भी मुझ से होकर प्रवेश करता है, तो
वह बचाया जाएगा, तथा वह भीतर आएगा और बाहर जाएगा
तथा चारा पाएगा।

10 चोर इसके अलावा नहीं आता है कि वह चोरी करे और
हत्या करे और नाश करे। मैं इसलिए आया कि वे जीवन प्राप्त
करें और उसे बहुतायत से प्राप्त करें।

11 मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना
जीवन देता है।

12 और भाड़े पर रखा हुआ व्यक्ति, जो चरवाहा नहीं है, और
भेड़ें उसकी अपनी नहीं हैं, वह भेड़िए को आते हुए देखकर
भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उनको पकड़
लेता है और उनको तितर-बितर कर देता है,

13 क्योंकि वह तो भाड़े पर रखा हुआ व्यक्ति है और उसे भेड़ों
की चिन्ता नहीं है।

14 मैं अच्छा चरवाहा हूँ, और जो मेरी हैं मैं उनको जानता हूँ,
और जो मेरी हैं वे भी मुझे जानती हैं,

15 जैसे पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ; और
मैं भेड़ों के लिए अपना जीवन देता हूँ।

16 और मेरे पास अन्य भेड़ें भी हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं।
मुझे उनको भी लेकर आना आवश्यक है, और वे मेरी वाणी
को सुनेंगी और एक ही झुंड, एक ही चरवाहा होगा।

17 इसी कारण से पिता मुझ से प्रेम करता है, क्योंकि मैं अपना
जीवन देता हूँ ताकि मैं उसे फिर से ले लूँ।

18 कोई भी इसे मुझ से नहीं लेता है, परन्तु मैं स्वयं ही इसे देता
हूँ। मुझे इसे देने का अधिकार है, और मुझे इसे फिर से ले लेने
का अधिकार भी है। मुझे यह आदेश अपने पिता से मिला है।"

19 इन बातों के कारण फिर से यहूदियों के बीच में विभाजन
हो गया।

20 अब उनमें से बहुत से कह रहे थे, "उसमें दुष्टात्मा है और
वह पागल है। तुम उसकी सुनते ही क्यों हो?"

21 अन्य कह रहे थे, "यह दुष्टात्मा से ग्रस्त मनुष्य की बातें नहीं
हैं। कोई दुष्टात्मा किसी अंधे की आँखें नहीं खोल सकता, क्या
वह कर सकता है?"

22 फिर यरूशलेम में स्थापन पर्व का हुआ। यह जाड़े का
समय था,

23 और यीशु मंदिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।

24 तब यहूदियों ने उसे घेर लिया और उससे कहने लगे, "तू
कब तक हमारे प्राण लेता रहेगा? यदि तू ही मसीह है, तो हम
को खुले रूप से बता दे।"

25 यीशु ने उनको प्रतिउत्तर दिया, "मैंने तुम को बता दिया,
परन्तु तुम विश्वास ही नहीं करते। जो काम मैं अपने पिता के
नाम से करता हूँ, वे ही मेरे विषय में गवाही देते हैं।

26 परन्तु तुम मुझ पर विश्वास इसलिए नहीं करते, क्योंकि तुम
मेरी भेड़ें नहीं हो।

27 मेरी भेड़ें मेरी वाणी को सुनती हैं; मैं उनको जानता हूँ, और
वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं।

28 और मैं उनको अनन्त जीवन प्रदान करता हूँ, और वे निश्चय
ही अनन्तकाल तक नाश नहीं होंगी, और कोई भी उनमें से
किसी को भी मेरे हाथ से छीन नहीं लेगा।

29 मेरा पिता, जिसने मुझे उनको दिया है, बाकी सबसे बढ़कर
है, और कोई भी उनको पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।

30 मैं और पिता एक हैं।"

31 यहूदियों ने फिर से पत्थर उठा लिए कि उसे पत्थरवाह करें।

32 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैंने तुम को पिता की ओर से
बहुत से भले काम दिखाए। उन कामों में से किसके लिए तुम
मुझे पत्थरवाह कर रहे हो?"

33 उन यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हम किसी भले काम के
लिए नहीं, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करने के कारण तुझे
पत्थरवाह कर रहे हैं, और क्योंकि तू, एक मनुष्य, अपने आप
को परमेश्वर बना रहा है।"

34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "क्या यह तुम्हारी व्यवस्था में
नहीं लिखा है कि 'मैंने कहा, "तुम ईश्वर हो"'?

35 यदि उसने उनको ईश्वर कहा, जिनके पास परमेश्वर का
वचन पहुँचा (और पवित्रशास्त्र को खंडित नहीं किया जा
सकता),

36 तो क्या तुम उससे जिसे पिता ने अलग किया और इस
संसार में भेजा इसलिए ऐसा कहते हो कि 'तू परमेश्वर की
निन्दा कर रहा है,' क्योंकि मैंने कहा कि 'मैं परमेश्वर का पुत्र
हूँ'?

37 यदि मैं अपने पिता के कामों को नहीं कर रहा हूँ, तो मेरा
विश्वास मत करो।

38 परन्तु यदि मैं उनको कर रहा हूँ, तो यहाँ तक कि यदि तुम
मेरा विश्वास न भी करो, तो उन कामों पर ही विश्वास करो
जिससे कि तुम जान लो और समझ लो कि पिता मुझ में है और
यह कि मैं पिता में हूँ।"

39 इसलिए, वे उसे फिर से पकड़ने की खोज कर रहे थे, परन्तु
वह उनके हाथ से निकलकर चला गया।

40 और वह फिर से यरदन पार उस स्थान पर चला गया जहाँ
यूहन्ना पहले बपतिस्मा दे रहा था, और वह वहाँ रुक गया।

41 और बहुत से लोग उसके पास आए और वे कह रहे थे,
"यूहन्ना ने तो वास्तव में कोई चिन्ह प्रकट नहीं किया, परन्तु जो
सब बातें यूहन्ना ने इस मनुष्य के बारे में कही थीं वे सत्य हैं।"

42 और वहाँ बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया।

John 11:1

1 अब एक मनुष्य, बैतनिय्याह का रहनेवाला लाज़र, बीमार था,
वह मरियम और उसकी बहन मार्था के गाँव का निवासी था।

2 अब यह वही मरियम थी जिसने लोहबान से प्रभु का
अभिषेक किया था और उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा
था, उसी का भाई लाज़र बीमार था।

3 इसलिए, उन बहनों ने यीशु के पास यह कहकर संदेश भेजा,
"हे महोदय, देख, जिससे तू प्रेम करता है वह बीमार है।"

4 परन्तु यह सुनकर, यीशु ने कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं
है परन्तु यह परमेश्वर की महिमा के लिए है ताकि इसके द्वारा
परमेश्वर के पुत्र का महिमामंडन हो सके।।"

5 (अब यीशु मार्था और उसकी बहन और लाज़र से प्रेम करता
था।)

6 इसलिए, जब उसने सुना कि वह बीमार था, तब जहाँ वह था
वहाँ उस स्थान में वह वास्तव में दो दिन और रुक गया।

7 फिर इसके बाद, वह चेलों से कहता है, "आओ फिर से
यहूदिया को चलें।"

8 चेले उससे कहते हैं, "हे रब्बी, इस समय पर यहूदी तुझे
पत्थरवाह करने की खोज में हैं, और तू फिर से वहीं वापस जा
रहा है?"

9 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन में 12 घंटे नहीं होते? यदि कोई
दिन में चले, तो वह ठोकर इसलिए नहीं खाएगा, क्योंकि वह
इस संसार की ज्योति के द्वारा देखता है।

10 परन्तु यदि कोई रात में चले, तो वह इसलिए ठोकर खाएगा,
क्योंकि उसमें वह ज्योति नहीं है।"

11 उसने इन बातों को कहा, और इसके बाद, वह उनसे कहता
है, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है, परन्तु मैं इसलिए जा रहा हूँ
ताकि मैं उसे नींद से जगाऊँ।"

12 इसलिए, चेलों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो गया है,
तो वह स्वस्थ हो जाएगा।"

13 (अब यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय में बताया था, परन्तु
उन्होंने सोचा कि वह ऊँघने वाली नींद के बारे में बोल रहा है।)

14 इसलिए, फिर यीशु ने उनसे स्पष्ट रूप से कह दिया, "लाज़र
मर गया है।

15 और मैं तुम्हारी खातिर हर्षित हूँ कि मैं वहाँ नहीं था, जिससे
कि तुम विश्वास करो। परन्तु आओ हम उसके पास चलें।"

16 इस कारण से, थोमा ने, जो दिदुमुस कहलाता है, {अपने}
साथी चेलों से कहा, "आओ हम भी चलें, ताकि हम उसके साथ
मरें।"

17 अतः, यीशु ने आकर पाया कि उसे तो कब्र में रखे हुए पहले
से ही चार दिन हो चुके थे।

18 अब बैतनिय्याह यरूशलेम के निकट लगभग दो मील की
दूरी पर ही था।

19 और मरियम तथा मार्था के पास बहुत से यहूदी भी इसलिए
आए हुए थे ताकि {उनके} भाई के विषय में उनको सांत्वना
दें।

20 फिर मार्था ने जब सुना कि "यीशु आ रहा है," तो वह उससे
मिलने के लिए गई, परन्तु मरियम घर में ही बैठी हुई थी।

21 तब मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ पर होता, तो
मेरा भाई मरता नहीं।

22 परन्तु अब भी, मैं जानती हूँ कि जो कुछ भी तू परमेश्वर से
माँगे, वह परमेश्वर तुझे देगा।"

23 यीशु उससे कहता है, "तेरा भाई फिर से जी उठेगा।"

24 मार्था उससे कहती है, "मैं जानती हूँ कि अंतिम दिन में
पुनरुत्थान के समय वह फिर से जी उठेगा।"

25 यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ; वह
जो मुझ पर विश्वास करता है, यहाँ तक कि यदि वह मर भी
जाए, तब भी जीएगा;

26 और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह
निश्चय ही अनन्तकाल तक नहीं मरेगा। क्या तू इस पर विश्वास
करती है?"

27 वह उससे कहती है, "हाँ, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि तू
ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है, जो संसार में आने वाला है।"

28 और यह कहकर, वह चली गई और चुपके से अपनी बहन
मरियम को यह कहकर बुलाया, "गुरु यहाँ पर है और तुझे
बुला रहा है।"

29 अब जब उसने यह सुना, तो वह तुरन्त उठी और उसके
पास गई।

30 (अब यीशु गाँव में अभी तक नहीं आया था परन्तु अभी भी
उसी स्थान में था जहाँ मार्था उससे मिली थी।)

31 फिर जब उन यहूदियों ने जो उसके साथ घर में थे और उसे
सांत्वना दे रहे थे, देखा कि मरियम तुरन्त उठी और बाहर
निकल गई, तो यह सोचकर वे उसके पीछे-पीछे गए कि वह
कब्र पर इसलिए जा रही थी ताकि वह वहाँ रोए।

32 फिर जैसे ही मरियम उस स्थान में पहुँची जहाँ यीशु था, तो
उसे देखकर, उससे यह कहते हुए वह उसके पाँवों पर गिर
पड़ी, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ पर होता, तो मेरा भाई मरता नहीं।"

33 इसलिए जब यीशु ने उसे रोते हुए देखा, और उसके साथ
आए हुए यहूदी भी रो रहे थे, तो वह आत्मा में बहुत ही व्याकुल
हो गया और वह परेशान भी हुआ;

34 और उसने कहा, "तुम ने उसे कहाँ रखा है?" वे उससे कहते
हैं, "हे प्रभु, आ और देख ले।"

35 यीशु रोया।

36 तब यहूदियों ने कहा, "देखो वह उससे कितना प्रेम करता
था!"

37 परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "क्या यह व्यक्ति, जिसने अंधे
मनुष्य की आँखें खोली थीं, ऐसा कार्य नहीं कर सका जिससे
कि यह व्यक्ति भी न मरता?"

38 इसलिए, यीशु फिर से, अपने भीतर बहुत व्याकुल होकर,
कब्र पर गया। अब वह एक गुफा थी, और उसके आगे एक
पत्थर रखा था।

39 यीशु कहता है, "पत्थर को हटा दो।" जो व्यक्ति मर गया था
उसकी बहन मार्था, उससे कहती है, "हे प्रभु, वह अब तो दुर्गंध
देता होगा, क्योंकि चार दिन हो चुके हैं।"

40 यीशु उससे कहता है, "क्या मैंने तुझ से नहीं कहा था कि,
यदि तू विश्वास करे, तो तू परमेश्वर की महिमा को देखेगी?"

41 इसलिए, उन्होंने पत्थर को हटा दिया। तब यीशु ने {अपनी}
आँखें ऊपर उठाकर कहा, "हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता
हूँ कि तूने मेरी सुन ली है।

42 अब मैं जान गया हूँ कि तू हमेशा सुनता है, परन्तु इस भीड़
के कारण जो चारों ओर खड़ी है मैंने ऐसा कहा, ताकि वे
विश्वास करें कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

43 और ऐसा कहकर, वह ऊँची आवाज में चिल्लाया, "हे
लाज़र, बाहर निकल आ!"

44 वह मरा हुआ व्यक्ति बाहर निकल आया, {उसके} पाँव
और हाथ कपड़ों से बंधे हुए थे, और उसका मुँह भी एक कपड़े
से बंधा हुआ था। यीशु उनसे कहता है, "उसे खोल दो, और
उसे जाने दो।"

45 इसलिए, उन बहुत से यहूदियों ने, जो मरियम के पास आए
थे और जो उसने किया उसे देखा था उस पर विश्वास किया।

46 परन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास चले गए और उनको
वे बातें बता दीं जो यीशु ने की थीं।

47 इस कारण से, प्रधान याजकों और फरीसियों ने महासभा
को एक साथ इकट्ठा करके कहा, "हम क्या करें, क्योंकि यह
मनुष्य तो बहुत सारे चिन्ह प्रकट करता है?

48 यदि हम उसे इस प्रकार से अकेला छोड़ दें, तो सब उस पर
विश्वास कर लेंगे, और रोमी आएँगे और हम से हमारा स्थान
और हमारी जाति दोनों ले लेंगे। "

49 परन्तु उनमें से एक व्यक्ति, कैफा ने, जो उस वर्ष का
महायाजक था, उनसे कहा, "तुम कुछ भी नहीं जानते हो।

50 तुम यह नहीं सोचते कि तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि एक
मनुष्य लोगों के लिए मरे, और सारा देश नाश न हो।"

51 (अब यह बात उसने अपनी ओर से नहीं कही थी, परन्तु
उस वर्ष का महायाजक होकर, उसने भविष्यद्वाणी की थी कि
उस जाति के लिए यीशु मरने जा रहा था,

52 और न केवल जाति के लिए, परन्तु इसलिए कि परमेश्वर की
संतानें जो तितर-बितर हो गई हैं वे भी एक साथ इकट्ठी हो
जाएँ।)

53 इसलिए, उसी दिन उन्होंने षड्यंत्र रचा ताकि वे उसकी
हत्या करें।

54 इसी कारण से, यीशु आगे को यहूदियों के बीच में खुले रूप
से नहीं फिरा, परन्तु वह वहाँ से जंगल के समीप के देश में,
एप्रैम नामक नगर को चला गया। वहाँ वह अपने चेलों के साथ
रहा।

55 अब यहूदियों का फसह का पर्व निकट था, और बहुत से
लोग फसह से पहले गाँवों से ऊपर यरूशलेम को इसलिए गए
ताकि अपने आप को शुद्ध करें।

56 अतः वे यीशु की खोज कर रहे थे, और जब वे मंदिर में खड़े
हुए थे तो एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, "इस विषय में तुम क्या
सोचते हो? कि वह निश्चय ही पर्व में नहीं आएगा?"

57 अब प्रधान याजकों और फरीसियों ने यह आदेश दिया हुआ
था कि यदि कोई जन जानता हो कि वह कहाँ है, तो उसे
इसकी खबर करनी है ताकि वे उसे पकड़ सकें।

John 12:1

1 फिर, फसह के पर्व से छः दिन पहले, यीशु बैतनिय्याह को
आया, जहाँ वह लाज़र था, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जीवित
किया था।

2 अतः उन्होंने वहाँ उसके लिए रात का भोजन तैयार किया,
और मार्था परोस रही थी, परन्तु लाज़र उनमें से एक था जो
यीशु के साथ मेज़ पर बैठे हुए थे।

3 फिर मरियम ने, बहुत मूल्यवान शुद्ध जटामांसी से बनाया
हुआ एक लीटर सुगंधित तेल लेकर, यीशु के पाँवों का
अभिषेक किया और उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा।
अब वह घर उस सुगंधित तेल की सुगंध से भर गया।

4 परन्तु उसके चेलों में से एक, यहूदा इस्करियोती, वही जो
उसे धोखा देने जा रहा था, कहता है,

5 "किस कारण से इस सुगंधित तेल को 300 दीनारों में बेचकर
निर्धनों को नहीं दिया गया?"

6 (अब उसने ऐसा इसलिए नहीं कहा, क्योंकि निर्धनों के बारे
में यह उसकी चिन्ता थी, परन्तु इसलिए क्योंकि वह चोर था,
और वह धन की थैली रखता था और जो उसमें डाला जाता था
वह चुरा लेता था।

7 इसलिए यीशु ने कहा, "उसे अकेला छोड़ दो ताकि वह इसे
मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए बचाए रखे।

8 क्योंकि तुम्हारे साथ निर्धन तो हमेशा ही रहेंगे, परन्तु मैं
तुम्हारे पास हमेशा नहीं रहूँगा।"

9 फिर यहूदियों की एक बड़ी भीड़ को मालूम हुआ कि यीशु
वहाँ था, और वे न केवल यीशु को, परन्तु लाज़र को देखने के
लिए भी आ गए, जिसे उसने मरे हुओं में से जीवित किया था।

10 परन्तु प्रधान याजकों ने षड्यंत्र रचा ताकि वे लाज़र की
हत्या भी कर दें;

11 क्योंकि उसके कारण यहूदियों में से बहुत से चले गए थे
और यीशु पर विश्वास किया।

12 अगले दिन एक बड़ी भीड़ ने, जो पर्व में आई थी, यह सुनकर
कि यीशु यरूशलेम आ रहा है,

13 उन्होंने खजूर के पेड़ की डालियों को लिया और उससे
मिलने के लिए निकल पड़े और चिल्लाने लगे, "होशाना! धन्य
है वह जो प्रभु, यहाँ तक कि इस्राएल के राजा के नाम से भी
आता है।"

14 अब यीशु, एक जवान गदहा मिलने पर, उस पर बैठ गया,
जैसा कि यह लिखा है,

15 "हे सिय्योन की पुत्री, मत डर; देख, तेरा राजा, गदहे के बच्चे
पर बैठा हुआ, आ रहा है।"

16 उसके चेले पहले तो इन बातों को समझे नहीं; परन्तु जब
यीशु का महिमामंडन हुआ, तब उनको स्मरण आया कि
उसके बारे में यह बातें लिखी हुई थीं और यह कि उन्होंने
उसके साथ इन कामों को किया था।

17 फिर भीड़ ने गवाही दी कि वे उसके साथ ही थे जब उसने
लाज़र को कब्र से बाहर बुलाया और उसे मरे हुओं में से
जीवित कर दिया था।

18 इस कारण से भी वह भीड़ उससे मिलने के लिए निकली
थी: क्योंकि उन्होंने सुना था कि उसने इस चिन्ह को प्रकट
किया था।

19 इसलिए, फरीसियों ने आपस में कहा, "तुम ध्यान दो कि तुम
कुछ भी नहीं कर पा रहे हो! देखो, संसार उसके पीछे चला
गया है!"

20 अब उनके बीच में कुछ यूनानी भी थे जो ऊपर इसलिए जा
रहे थे ताकि वे पर्व में आराधना करें।

21 अतः ये पुरुष फिलिप्पुस के पास गए, जो गलील के बैतसैदा
का रहने वाला {था}, और उससे यह कहकर विनती की, "हे
महोदय, हम यीशु से मिलना चाहते हैं।"

22 फिलिप्पुस जाकर अन्द्रियास से बोलता है; अन्द्रियास और
फिलिप्पुस जाकर यीशु से बोलते हैं।

23 अब यीशु यह कहकर उनको उत्तर देता है, "वह समय आ
गया है कि मनुष्य के पुत्र का महिमामंडन किया जाए।

24 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना, भूमि
पर गिरकर मरता नहीं, वह अकेला ही रहता है; परन्तु यदि
वह मर जाए, तो बहुत फल उत्पन्न करता है।

25 जो अपने जीवन से प्रेम करता है वह उसे खो देगा, परन्तु
जो इस संसार में अपने जीवन से घृणा करता है वह अनन्त
जीवन के लिए उसकी रक्षा करेगा।

26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो उसे मेरे पीछे आने दो; और
जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा
करता है, तो पिता उसका सम्मान करेगा।

27 अब मेरी आत्मा परेशान है, और मैं क्या कहूँ? 'हे पिता, इस
समय से मुझे बचा ले'? परन्तु इसी कारण से मैं इस समय तक
पहुँचा हूँ।

28 हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।" तब स्वर्ग से एक वाणी
आई, "मैंने इसका महिमामंडन किया है और मैं फिर से
इसका महिमामंडन करूँगा।"

29 तब जो भीड़ पास ही में खड़ी थी, उन्होंने भी इसे सुना, और
वे कह रहे थे कि बादल गरजा। अन्य कह रहे थे, "किसी
स्वर्गदूत ने उससे बात की है।"

30 यीशु ने उत्तर दिया और कहा, "यह वाणी मेरे लिए नहीं,
परन्तु तुम्हारे लिए आई थी।

31 अब इस संसार का न्याय होता है: अब इस संसार के शासक
को निकाल दिया जाएगा।

32 और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँ, तो मैं सबको
अपने पास खींच लूँगा।"

33 अब वह यह संकेत करने के लिए कह रहा था कि वह किस
प्रकार की मृत्यु से मरने वाला था।

34 तब भीड़ ने उसे उत्तर दिया, "हम ने व्यवस्था में से सुना है
कि मसीह अनन्तकाल तक बना रहेगा। और तू कैसे कहता है
कि मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाया जाना आवश्यक है'?
यह मनुष्य का पुत्र कौन है?"

35 तब यीशु ने उनसे कहा, "वह ज्योति अभी थोड़े समय के
लिए तुम्हारे साथ रहेगी। जबकि ज्योति तुम्हारे साथ है तो
चलते रहो, जिससे कि अंधकार तुम पर हावी न हो जाए। और
जो अंधकार में चलता है वह जानता नहीं कि वह कहाँ जा रहा
है।

36 जबकि ज्योति तुम्हारे साथ है तो ज्योति पर विश्वास करो
ताकि तुम भी ज्योति के पुत्र बन जाओ।" यीशु ने इन बातों को
कहा, और निकलकर चला गया, और उनसे छिपा रहा।

37 यद्यपि यीशु ने उनके सामने बहुत सारे चिन्हों को प्रकट
किया था, वे उस पर विश्वास नहीं कर रहे थे।

38 जिससे कि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वह वचन पूरा हो
जाए, जिसमें उसने कहा था: "हे प्रभु, किसने हमारी खबर पर
विश्वास किया, और किस पर प्रभु की भुजा प्रकट हुई?"

39 इस कारण से ही वे विश्वास नहीं कर पाए, क्योंकि यशायाह
ने फिर से कहा था,

40 "उनकी आँखों को उसने अंधा कर दिया, और उनके हृदयों
को उसने कठोर कर दिया है; ऐसा न हो कि वे {अपनी} आँखों
से देखें और {अपने} हृदय से समझें, और मुड़ जाएँ, और मैं
उनको चंगा कर दूँ।"

41 यशायाह ने इन बातों को इसलिए कहा था क्योंकि उसने
यीशु की महिमा देखी थी और उसके बारे में बातें की थीं।

42 परन्तु फिर भी, यहाँ तक कि बहुत से शासकों ने भी यीशु
पर विश्वास किया; परन्तु फरीसियों के कारण, वे इसका
अंगीकार नहीं कर रहे थे जिसके कि उनको आराधनालय से
प्रतिबंधित न कर दिया जाए।

43 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की ओर से बड़ाई से बढ़कर
मनुष्यों की ओर से बड़ाई से प्रेम किया।

44 अब यीशु ने चिल्लाकर कहा, “जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह न केवल मुझ पर परन्तु मेरे भेजने वाले पर भी विश्वास करता है,

45 जो कोई मुझे देखता है वह उसे भी देखता है जिसने मुझे भेजा है।

46 मैं ज्योति के रूप में संसार में आया हूँ, ताकि हर एक वह जन जो मुझ पर विश्वास करता है अंधकार में न रहे।

47 और यदि कोई जन मेरी बातों को सुनता तो है परन्तु उनका पालन नहीं करता, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता; क्योंकि मैं इसलिए नहीं आया कि संसार को दोषी ठहराऊँ, परन्तु इसलिए कि मैं संसार को बचाऊँ।

48 जो मुझे अस्वीकार करता है और जो मेरी बातों को ग्रहण नहीं करता, उसके पास एक जन है जो उसे दोषी ठहराता है। जो वचन मैंने बोला, यही उसे अंतिम दिन में दोषी ठहराएगा।

49 क्योंकि मैंने अपनी ओर से नहीं बोला, परन्तु स्वयं पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, मुझे आदेश दिया है, कि मुझे क्या कहना है और मुझे क्या बोलना है।

50 और मैं जानता हूँ कि उसका आदेश ही अनन्त जीवन है। इसलिए, मैं वही कहता हूँ, जैसा पिता ने मुझ से कहा है, वैसा ही मैं बोलता हूँ।”

John 13:1

1 अब फसह के पर्व से पहले, यीशु जान गया कि उसका समय आ गया था कि वह इस संसार से निकल कर पिता के पास जाए। उसके {अपनों से} जो संसार में थे जैसा वह प्रेम करता था, वह अंत तक उनसे वैसा ही प्रेम करता रहा।

2 और जब भोजन का समय आने वाला था, तो शैतान पहले से ही शमौन इस्करियोती के {पुत्र}, यहूदा के हृदय में डाल चुका था, कि वह यीशु को धोखा दे।

3 यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उसके हाथों में सौंप दिया था, और यह कि वह परमेश्वर के पास से आया था और परमेश्वर के पास वापस जा रहा था,

4 तो वह भोजन पर से उठा और {अपने} ऊपरी कपड़ों को उतार दिया। और एक तौलिया लेकर, उसे अपने चारों ओर लपेट लिया।

5 फिर उसने एक प्याले में पानी भरा और चेलों के पाँवों को धोना और उनको उस तौलिए से पोंछना आरम्भ कर दिया जो उसने अपने चारों ओर लपेटा हुआ था।

6 फिर वह शमौन पतरस के पास आता है। वह उससे कहता है, “हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँवों को धोता है?”

7 यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, “जो मैं करता हूँ उसे तू अभी नहीं समझता, परन्तु इन बातों के बाद में तू समझ जाएगा।”

8 पतरस उससे कहता है, “निश्चय ही तू अनन्तकाल तक मेरे पाँवों को धोने न पाएगा।” यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कोई भाग नहीं।”

9 शमौन पतरस उससे कहता है, “हे प्रभु, केवल मेरे पाँवों को ही नहीं, परन्तु {मेरे} हाथों और {मेरे} सिर को भी धो दे।”

10 यीशु उससे कहता है, “जो धुल चुका है उसे {अपने} पाँवों को धोने के अलावा, कुछ और आवश्यक नहीं, परन्तु वह पूर्ण रूप से शुद्ध है, और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब नहीं।”

11 (क्योंकि वह जानता था कि कौन उसे धोखा दे रहा है; इसी कारण से उसने कहा, “सब के सब शुद्ध नहीं हो।”)

12 अतः जब वह उनके पाँवों को धो चुका और अपने वस्त्रों को पहन लिया और फिर से बैठ गया, तो उसने उनसे कहा, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है?

13 तुम मुझे ‘गुरु’ और ‘प्रभु’ कहते हो, और तुम ठीक ही कह रहे हो, क्योंकि मैं वही हूँ।

14 फिर यदि मैंने, जो प्रभु और गुरु है, तुम्हारे पाँवों को धोया, तो तुम को भी एक-दूसरे के पाँवों को धोना चाहिए।

15 क्योंकि मैंने तुम को एक उदाहरण दे दिया है ताकि तुम भी
वैसा करो जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है।

16 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि कोई दास अपने स्वामी
की तुलना में बढ़कर नहीं है; और न संदेशवाहक उसकी
तुलना में बढ़कर है जिसने उसे भेजा है।

17 यदि तुम इन बातों को जान लो, यदि तुम उनका पालन करो
तो तुम धन्य हो।

18 मैं तुम सब के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ; जिनको मैंने चुना
उनको मैं जानता हूँ—परन्तु इसलिए कि पवित्रशास्त्र पूरा हो
जाए: 'जो मेरे साथ रोटी खाता है उसी ने अपनी लात मेरे विरोध
में उठाई।'

19 इससे पहले कि यह घटित हो मैं तुम को यह अभी से बता
देता हूँ, ताकि जब यह घटित हो, तो तुम विश्वास करो कि मैं
वही हूँ।

20 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जिस किसी को मैं भेजूँ जो
उसे ग्रहण करे तो वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण
करे वह उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।"

21 ऐसा कहकर, यीशु अपनी आत्मा में परेशान हो गया, और
उसने गवाही देकर कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि
तुम में से एक मुझे धोखा देगा।"

22 चेले आश्चर्य करते हुए एक-दूसरे की तरफ देखने लगे, कि
वह किसके बारे में बोल रहा था।

23 अब उसका एक चेला, जिससे यीशु प्रेम करता था, यीशु की
छाती की ओर झुका हुआ भोजन करने के लिए बैठा हुआ था।

24 इसलिए, शमौन पतरस ने उसे यह पूछने के लिए संकेत
किया, "वह कौन है जिसके बारे में वह बोल रहा है।"

25 अतः वैसे ही यीशु की छाती की ओर झुककर, वह उससे
कहता है, "हे प्रभु, वह कौन है?"

26 यीशु ने उत्तर दिया, "वह वही है जिसे मैं रोटी का टुकड़ा
डुबोने के बाद उसे सौंपकर दे दूँगा।" फिर रोटी को डुबोकर,
उसने उसे शमौन इस्करियोती के {पुत्र}, यहूदा को दे दिया।

27 और रोटी लेने के बाद, फिर शैतान उसमें प्रवेश कर गया।
अतः, यीशु उससे कहता है, "जो तू कर रहा है, शीघ्रता से
कर।"

28 (अब जो मेज पर बैठे हुए थे उनमें से कोई नहीं जानता था
कि उसने उससे ऐसा क्यों कहा।

29 क्योंकि कुछ सोच रहे थे, चूँकि यहूदा के पास धन की थैली
रहती थी, इसलिए यीशु उससे कहता है, "पर्व के लिए हमें जिन
वस्तुओं की आवश्यकता है वह खरीद ले," या यह कि वह
निर्धनों को कुछ दे।)

30 अतः, रोटी लेकर, वह तुरन्त ही बाहर चला गया। अब वह
रात का समय था।

31 इसलिए, जब वह बाहर चला गया, तो यीशु कहता है, "अब
मनुष्य के पुत्र का महिमामंडन हुआ है, और उसमें परमेश्वर
का महिमामंडन हुआ है।

32 और परमेश्वर अपने में उसका महिमामंडन करेगा, और
वह तुरन्त ही उसका महिमामंडन करेगा।

33 हे छोटे बच्चों, मैं अभी थोड़े समय के लिए तुम्हारे साथ हूँ।
तुम मुझे खोजोगे, और जैसा मैंने यहूदियों से कहा था, 'जहाँ मैं
जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।' अब मैं तुम से भी यही
कहता हूँ।

34 मैं तुम को एक नई आज्ञा देता हूँ, ताकि तुम एक-दूसरे से
प्रेम करो; जैसा मैंने तुम से प्रेम किया, वैसा ही तुम भी एक-
दूसरे से प्रेम करो।

35 यदि तुम एक-दूसरे के लिए प्रेम रखो, तो इसके द्वारा हर
कोई जान लेगा कि तुम मेरे चेले हो।"

36 शमौन पतरस उससे कहता है, “हे प्रभु, तू कहाँ जा रहा है?”
यीशु ने उसे उत्तर दिया, “जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू मेरे पीछे
अभी नहीं आ सकता, परन्तु तू बाद में पीछे आएगा।”

37 पतरस उससे कहता है, “हे प्रभु, मैं तेरे पीछे अभी क्यों नहीं
आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपना जीवन भी दे दूँगा।”

38 यीशु ने उत्तर दिया, “क्या तू मेरे लिए अपना जीवन भी दे
देगा? मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, इससे पहले कि तू तीन बार
मेरा इन्कार न कर दे निश्चय ही मुर्गा बाँग नहीं देगा।”

John 14:1

1 “अपने हृदय को परेशान मत होने दो। परमेश्वर पर विश्वास
करो; मुझ पर भी विश्वास करो।

2 मेरे पिता के घर में रहने के बहुत सारे स्थान हैं। परन्तु यदि
न होते, तो मैं तुम को बता देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए स्थान
तैयार करने जा रहा हूँ।

3 और यदि मैं जाऊँ और तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ, तो मैं
फिर से आऊँगा और स्वयं ही तुम को ग्रहण करूँगा, ताकि
जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।

4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ का मार्ग तुम जानते हो।”

5 थोमा यीशु से कहता है, “हे प्रभु, हम तो जानते नहीं कि तू
कहाँ जा रहा है। तो हम उस मार्ग को कैसे जान सकते हैं?”

6 यीशु उससे कहता है, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ;
बिना मेरे द्वारा कोई भी पिता के पास नहीं आता।

7 यदि तुम ने मुझे जाना है, तो तुम मेरे पिता को भी जानोगे।
और अब से तुम उसे जानते हो और उसे देख भी लिया है।”

8 फिलिप्पुस यीशु से कहता है, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे,
और वही हमारे लिए पर्याप्त होगा।”

9 यीशु उससे कहता है, “हे फिलिप्पुस, मैं कितने लम्बे समय
से तेरे साथ हूँ और तू मुझे नहीं जानता? जिस किसी ने मुझे
देखा है उसने पिता को भी देखा है। तो तू कैसे कहता है कि
‘पिता को हमें दिखा दे’?

10 क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ
में है? जो मैं तुम से कहता हूँ वह बातें मैं अपनी ओर से नहीं
बोलता, परन्तु पिता जो मुझ में बना रहता है अपना काम कर
रहा है।

11 मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में है।
परन्तु यदि नहीं, तो उन कामों के कारण ही से विश्वास करो।

12 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास करता
है, जिन कामों को मैं करता हूँ, वह भी करेगा, और वह इनकी
तुलना में बढ़कर कामों को करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा
रहा हूँ।

13 और मेरे नाम से तुम जो कुछ भी माँगोगे, वह मैं करूँगा
जिससे कि पुत्र में पिता का महिमामंडन हो।

14 यदि तुम मेरे नाम से कुछ भी मुझ से माँगते हो, तो मैं वह
करूँगा।

15 यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो तुम मेरी आज्ञाओं का
पालन करोगे,

16 और मैं पिता से प्रार्थना करूँगा, और वह तुम को एक अन्य
सहायक प्रदान करेगा ताकि वह तुम्हारे साथ अनन्तकाल तक
रहे—

17 अर्थात सत्य का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता,
क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे
जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ बना रहता है और वह तुम
में होगा।

18 मैं तुम को अनाथों के जैसे नहीं छोड़ूँगा; मैं तुम्हारे पास आ
रहा हूँ।

19 अभी थोड़े समय में संसार मुझे फिर नहीं देखेगा, परन्तु तुम
मुझे देखोगे। क्योंकि मैं जीवित हूँ, इसलिए तुम भी जीवित
रहोगे।

20 उस दिन तुम जान लोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम
मुझ में हो, और मैं तुम में हूँ।

21 जिसके पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उनका पालन करता
है, तो वही है जो मुझ से प्रेम कर रहा है, और जो मुझ से प्रेम
कर रहा है उसे मेरे पिता के द्वारा प्रेम किया जाएगा, और मैं
भी उससे प्रेम करूँगा और मैं स्वयं को उस पर प्रकट
करूँगा।"

22 यहूदा (जो इस्करियोती नहीं है) यीशु से कहता है, "हे प्रभु,
ऐसा क्या घटित हुआ है कि तू स्वयं को हम पर प्रकट करने
वाला है और संसार पर नहीं?"

23 यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "यदि कोई मुझ से प्रेम
करता है, तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और मेरा पिता
उससे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएँगे और हम
उसके साथ एक निवासस्थान बनाएँगे।

24 जो मुझ से प्रेम नहीं करता वह मेरी बातों का भी पालन नहीं
करता। और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं है, परन्तु
पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

25 जबकि मैं तुम्हारे साथ रह रहा हूँ, मैंने तुम से इन बातों को
कह दिया है।

26 अब वह सहायक—अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे
नाम से भेजेगा—वह तुम को सब बातें सिखा देगा, और वह
तुम को उन सब बातों के विषय में स्मरण करा देगा जो मैंने
तुम से कही थीं।

27 मैं तुम को शान्ति में छोड़ता हूँ; मैं तुम को अपनी शान्ति
प्रदान करता हूँ। मैं तुम को वैसे नहीं देता जैसे संसार देता है।
अपने हृदय को परेशान मत होने दो, और न उसे डरने दो।

28 तुम ने सुना कि मैंने तुम से कहा, 'मैं जा रहा हूँ, और मैं
तुम्हारे पास आऊँगा।' यदि तुम ने मुझ से प्रेम किया होता, तो
तुम आनन्दित होते क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ, क्योंकि
मेरी तुलना में पिता बढ़कर है।

29 और अब मैंने तुम को इस बात के घटित होने से पहले ही
बता दिया है ताकि, जब यह घटित हो, तो तुम विश्वास करोगे।

30 मैं तुम से अब अधिक बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस संसार
का शासक आ रहा है। और मुझ में उसका कुछ भी नहीं है,

31 परन्तु ताकि संसार जान ले कि मैं पिता से प्रेम करता हूँ, और
जैसा पिता ने मुझे आदेश दिया, वैसा ही मैं करता हूँ। उठो।
आओ हम यहाँ से चलें।"

John 15:1

1 "मैं सच्ची दाखलता हूँ, और मेरा पिता किसान है।

2 मेरी हर डाली जो फल उत्पन्न नहीं करती, उसे वह काट देता
है; और हर डाली जो फल उत्पन्न करती है, उसे वह छाँटता है
जिससे कि वह अधिक फल उत्पन्न करे।

3 तुम पहले से ही उस वचन के माध्यम से शुद्ध हो जो मैंने तुम
से कहा था।

4 मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जिस प्रकार से डाली अपने
आप से फल उत्पन्न नहीं कर सकती जब तक कि वह
दाखलता में बनी न रहे, वैसे ही तुम भी नहीं कर सकते, जब
तक कि तुम मुझ में बने न रहो।

5 मैं दाखलता हूँ; तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है
और मैं उसमें, वह बहुत फल उत्पन्न करता है, क्योंकि मेरे
बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

6 यदि कोई मुझ में बना नहीं रहता, तो उसे एक डाली के
समान फेंक दिया जाता है और वह सूख जाता है, और वे
उनको इकट्ठा करते हैं और {उनको} आग में फेंक देते हैं,
और वे जल जाती हैं।

7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो
जो कुछ भी तुम इच्छा रखते हो माँग लो, और वह तुम्हारे लिए
किया जाएगा।

8 मेरे पिता की महिमा इसी में हुई, कि तुम अधिक फल उत्पन्न
करो और तुम मेरे चेले बनो।

9 जैसे पिता ने मुझ से प्रेम किया, वैसे ही मैंने भी तुम से प्रेम
किया है। मेरे प्रेम में बने रहो।

10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करो, तो तुम मेरे प्रेम में
बने रहोगे, जिस प्रकार से मैंने मेरे पिता की आज्ञाओं का पालन
किया और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

11 मैंने तुम से यह बातें इसलिए कही हैं जिससे कि मेरा आनन्द
तुम में हो और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

12 मेरी आज्ञा यह है, कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो जैसा प्रेम
मैंने तुम से किया है।

13 इससे बढ़कर प्रेम किसी का नहीं—कि वह अपने मित्रों के
लिए अपना जीवन दे।

14 यदि तुम इन बातों का पालन करो जिनकी मैं तुम को आज्ञा
देता हूँ तो तुम मेरे मित्र हो।

15 अब से मैं तुम को सेवक नहीं कहता, क्योंकि सेवक नहीं
जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है। परन्तु मैंने तुम को
अपना मित्र कहा है, क्योंकि सब बातें जो मैंने मेरे पिता से सुनीं,
मैंने तुम को बता दी हैं।

16 तुम ने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम को चुना और तुम को
नियुक्त किया है ताकि तुम जाकर फल उत्पन्न करो, और
तुम्हारा फल बना रह, ताकि तुम पिता से मेरे नाम से जो कुछ
भी माँगो, वह तुम को वो देगा।

17 इन बातों की आज्ञा मैं तुम को इसलिए देता हूँ, ताकि तुम
एक-दूसरे से प्रेम करो।

18 यदि संसार तुम से बैर करता है, तो जान लो कि तुम से पहले
उसने मुझ से बैर किया था।

19 यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपने लोगों से प्रेम
करता। परन्तु क्योंकि तुम संसार के नहीं हो, परन्तु मैंने तुम
को संसार में से चुना है, इस कारण से संसार तुम से बैर करता
है।

20 जो बात मैंने तुम से कही थी उसे स्मरण रखो, 'कोई सेवक
अपने स्वामी की तुलना में बढ़कर नहीं है।' यदि उन्होंने मुझे
पीड़ित किया, तो वे तुम को भी पीड़ित करेंगे; यदि उन्होंने मेरी
बात का पालन किया, तो वे तुम्हारी बात का पालन भी करेंगे।

21 परन्तु मेरे नाम के कारण वे तुम्हारे साथ इन सब कामों को
इसलिए करेंगे, क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है।

22 यदि मैंने आकर उनसे न बोला होता, तो वे पापी न ठहरते,
परन्तु अब उनके पास उनके पापों के लिए कोई बहाना नहीं
है।

23 वह जो मुझ से बैर करता है वह मेरे पिता से भी बैर करता
है।

24 यदि मैंने उन कामों को न किया होता जो उनके बीच में
अन्य किसी ने नहीं किए, तो वे पापी न ठहरते, परन्तु अब वे
मुझे और मेरे पिता दोनों को देख चुके हैं और मुझ से और मेरे
पिता दोनों से बैर किया है।

25 परन्तु ऐसा इसलिए है ताकि वह वचन पूरा हो जो उनकी
व्यवस्था में लिखा है, 'उन्होंने बिना किसी कारण मुझ से बैर
किया।'

26 जब वह सहायक जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास
भेजूँगा—अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से
निकलता है—आएगा, तो वह मेरे बारे में गवाही देगा।

27 परन्तु तुम भी इसलिए गवाही देते हो क्योंकि तुम मेरे साथ
आरम्भ से ही हो।"

John 16:1

1 "मैंने तुम से इन बातों को इसलिए कहा ताकि तुम गिर न
पड़ो।

2 वे तुम को आराधनालयों से निकाल देंगे। परन्तु वह समय
आ रहा है जब हर कोई जो तुम्हारी हत्या करता है वह सोचेगा
कि वह परमेश्वर को सेवा प्रदान कर रहा है।

3 वे इन कामों को इसलिए करेंगे क्योंकि उन्होंने न पिता को
जाना है और न ही मुझे।

4 परन्तु मैंने तुम से इन बातों को इसलिए कहा ताकि जब वह
समय आए, तो तुम स्मरण रखो कि मैंने तुम को इनके बारे में
बता दिया था। परन्तु मैंने तुम को इन बातों के बारे में आरम्भ
में इसलिए नहीं बताया, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

5 परन्तु अब मैं उसके पास जाता हूँ जिसने मुझे भेजा है, और
तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता कि 'तू कहाँ जा रहा है?'

6 परन्तु क्योंकि मैंने तुम से इन बातों को कहा है, इसलिए
उदासी ने तुम्हारे हृदय को भर दिया है।

7 परन्तु मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है
कि मैं जाऊँ। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो वह सहायक तुम्हारे
पास नहीं आएगा। परन्तु यदि मैं जाऊँ, तो मैं उसे तुम्हारे पास
भेज दूँगा।

8 और वह आकर पाप के विषय में और धार्मिकता के विषय
में और न्याय के विषय में संसार को फटकारेगा—

9 पाप के विषय में इसलिए, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं
करते;

10 और धार्मिकता के विषय में इसलिए, क्योंकि मैं पिता के
पास जाता हूँ, और अब तुम मुझे न देखोगे;

11 और न्याय के विषय में इसलिए, क्योंकि इस संसार के
शासक का न्याय किया गया है।

12 मेरे पास कहने के लिए बहुत सारी बातें हैं, परन्तु तुम
{उनको} इस समय सहने में सक्षम नहीं हो।

13 परन्तु जब वह, अर्थात सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह
सम्पूर्ण सत्य में तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा, क्योंकि वह अपनी
ओर से नहीं बोलेगा, परन्तु वह वही बोलेगा जो कुछ भी वह
सुनेगा, और तुम को वह उन बातों को बताएगा जो आने वाली
हैं।

14 वह मेरा महिमामंडन करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से
लेगा और उनको वह तुम को बताएगा।

15 जितना कुछ भी पिता के पास है वह सब मेरा ही है। इस
कारण से, मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेगा और उनको
वह तुम को बताएगा।

16 और थोड़ा समय बीतने पर तुम मुझे फिर न देखोगे, तथा
थोड़ा और समय बीतेगा और तुम मुझे देखोगे।"

17 तब उसके कुछ चेलों ने एक-दूसरे से कहा, "यह क्या है जो
वह हम से कहता है कि 'थोड़ा समय बीतेगा और तुम मुझे न
देखोगे, तथा थोड़ा और समय बीतेगा और तुम मुझे देखोगे,'
और, 'क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ'?"

18 इस कारण से वे कह रहे थे, "यह 'थोड़ा समय' क्या है? हम
नहीं जानते कि वह क्या कह रहा है।"

19 यीशु जानता था कि वे उससे प्रश्न करना चाहते थे, और
उसने उनसे कहा, "क्या तुम आपस में ही इस विषय की खोज
कर रहे हो, कि मैंने कहा, 'थोड़ा समय बीतेगा और तुम मुझे न
देखोगे, तथा थोड़ा और समय बीतेगा और तुम मुझे देखोगे'?

20 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम रोओगे और विलाप
करोगे, परन्तु संसार प्रसन्न होगा। तुम शोकित होओगे, परन्तु
तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा।

21 जब कोई स्त्री जन्म देती है, तो उसे पीड़ा होती है क्योंकि
उसका समय आ गया है, परन्तु जब वह बच्चे को जन्म दे चुकी
होती है, तो फिर वह अपने उस आनन्द के कारण कि इस
संसार में एक व्यक्ति ने जन्म लिया है {अपनी} उस पीड़ा को
फिर स्मरण नहीं करती।

22 और इसलिए तुम को अभी शोक होता है, परन्तु मैं तुम से
फिर मिलूँगा, और तुम्हारा हृदय प्रसन्न होगा, और कोई भी तुम
से तुम्हारा आनन्द छीन नहीं लेगा।

23 और उस दिन तुम मुझ से कुछ भी नहीं पूछोगे। मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ, कि तुम मेरे नाम से पिता से जो कुछ भी
माँगोगे, वह तुम को वो देगा।

24 अभी तक तुम ने मेरे नाम से कुछ भी नहीं माँगा। माँगो, और
तुम को मिलेगा जिससे कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

25 मैंने यह बातें तुम से दृष्टांतों में कही हैं; ऐसा समय आ रहा
है जब मैं तुम से दृष्टांतों में फिर बात नहीं करूँगा, परन्तु बजाए
इसके मैं तुम को पिता के बारे में स्पष्ट रूप से बता दूँगा।

26 उस दिन तुम मेरे नाम से माँगोगे, और मैं तुम से यह नहीं
कहता कि मैं पिता से तुम्हारे लिए विनती करूँगा,

27 क्योंकि पिता स्वयं ही तुम से इसलिए प्रेम करता है, क्योंकि
तुम ने मुझ से प्रेम किया और विश्वास किया कि मैं परमेश्वर की
ओर से आया हूँ।

28 मैं पिता की ओर से आया हूँ, और मैं इस संसार में आया हूँ।
फिर से, मैं इस संसार को छोड़ रहा हूँ और मैं पिता के पास
जा रहा हूँ।"

29 उसके चेले कहते हैं, "देख, अब तू स्पष्ट रूप से कह रहा है
और तू दृष्टांतों में नहीं कह रहा है।

30 अब हम जानते हैं कि तू सब बातें जानता है, और तुझे
आवश्यकता नहीं कि कोई भी तुझ से प्रश्न करे। इससे हम
विश्वास करते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से आया है।"

31 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "क्या तुम अब विश्वास करते हो?

32 देखो, वह समय आ रहा है—और आ पहुँचा है—कि तुम
तितर-बितर किए जाओ, हर एक {अपने} घर को जाए, और
तुम मुझे अकेला छोड़ दो। तब पर भी मैं अकेला इसलिए नहीं
हूँ, क्योंकि पिता मेरे साथ है।

33 मैंने यह बातें तुम से इसलिए कहीं ताकि तुम को मुझ में
शान्ति मिले। संसार में तुम को परेशानियाँ मिलती है, परन्तु
हियाव बांधो, मैंने संसार को जीत लिया है।"

John 17:1

1 यीशु ने इन बातों को कहा और, अपनी आँखों को स्वर्ग की
ओर उठाकर, उसने कहा, "हे पिता, वह समय आ गया है।
अपने पुत्र की महिमा कर जिससे कि पुत्र भी तेरी महिमा करे,

2 चूँकि तूने उसे सब प्राणियों पर अधिकार प्रदान किया है
ताकि हर एक जन जिसे तूने उसे दिया है, वह उनको अनन्त
जीवन प्रदान करे।

3 अब अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ, एकमात्र सच्चे परमेश्वर
को, और उसे जिसे तूने भेजा है, अर्थात यीशु मसीह को जानें।

4 मैंने इस पृथ्वी पर, उस काम को पूरा करके तेरी महिमा की
है जो तूने मुझे दिया था कि मैं उसे करूँ।

5 और अब, हे पिता, अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से
कर जो इस संसार की रचना से पहले तेरे साथ मेरी थी।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर प्रकट कर दिया है जिनको तूने
संसार में से मुझे दिया था। वे तेरे थे, और तू ही ने उनको मुझे
दिया था, और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया है।

7 अब वे जानते हैं कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी
ओर से है,

8 क्योंकि मैंने उनको वह बातें सौंप दी जो तूने मुझे दी थीं, और
उन्होंने {उनको} ग्रहण कर लिया और वास्तव में जान गए हैं
कि मैं तेरी ही ओर से आया हूँ, और उन्होंने विश्वास कर लिया
है कि तू ही ने मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए विनती करता हूँ। मैं संसार के लिए विनती नहीं
करता, परन्तु उनके लिए जिनको तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे
तेरे ही हैं।

10 और जो कुछ मेरा है वह तेरा ही है, और जो तेरा है वह मेरा
है, और उनमें मेरी महिमा हुई है।

11 और मैं आगे को संसार में नहीं रहूँगा, परन्तु ये लोग इस
संसार में रहेंगे, और मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता,

जिनको तूने मुझे दिया है इनको अपने नाम में सुरक्षित रख
ताकि वे भी एक हों, जैसे कि हम एक हैं।

12 जब मैं उनके साथ था, तो जिनको तूने मुझे दिया था, मैंने
उनको तेरे नाम में सुरक्षित रखा। और मैंने उनकी रक्षा की,
और विनाश के पुत्र के अलावा, उनमें से एक भी नष्ट नहीं हुआ,
जिससे कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो जाए।

13 परन्तु अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ, और मैं इन बातों को संसार
में इसलिए कह रहा हूँ ताकि वे मेरा आनन्द अपने आप में पूरा
करें।

14 मैंने उनको तेरा वचन दे दिया है, और संसार ने उनसे
इसलिए बैर किया क्योंकि वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं भी
संसार का नहीं हूँ।

15 मैं तुझ से यह विनती नहीं करता कि तू उनको संसार में से
ले ले, परन्तु यह कि तू उनको उस दुष्ट जन से सुरक्षित रख।

16 वे संसार के नहीं हैं, जैसे कि मैं भी संसार का नहीं हूँ।

17 सत्य के द्वारा उनको पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।

18 जैसे तूने मुझे संसार में भेजा, वैसे ही मैंने भी उनको संसार
में भेजा है।

19 और उनकी खातिर मैंने स्वयं को पवित्र कर रखा है, ताकि
वे स्वयं भी सत्य के द्वारा पवित्र हो जाएँ।

20 परन्तु मैं केवल इनके लिए ही विनती नहीं करता, परन्तु
उनके लिए भी जो इनके वचन के माध्यम से मुझ पर विश्वास
करेंगे,

21 ताकि वे सब एक हो जाएँ, जैसे कि तू, हे पिता, मुझ में है,
और मैं तुझ में हूँ, कि वे भी हम में हों, जिससे कि संसार विश्वास
करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।

22 जो महिमा तूने मुझे दी, मैंने वह उनको भी दी है ताकि वे
एक हो जाएँ, जैसे हम एक हैं:

23 मैं उनमें, और तू मुझ में इसलिए है ताकि वे पूर्णरूप से एक
हो जाएँ जिससे कि संसार जान ले कि तू ही ने मुझे भेजा है और
तूने उनसे वैसा ही प्रेम किया जैसे प्रेम तूने मुझ से किया।

24 हे पिता, जिनको तूने मुझे दिया है, मेरी इच्छा है कि जहाँ मैं
हूँ वहाँ मेरी महिमा देखने के लिए वे भी मेरे साथ रहें, जो तूने
मुझे संसार की नींव डालने से पहले इसलिए दी थी क्योंकि तूने
मुझ से प्रेम किया था।

25 हे धर्मी पिता, भले ही संसार तुझे नहीं जानता, परन्तु मैं तुझे
जानता हूँ; और ये जानते हैं कि तू ही ने मुझे भेजा है।

26 और मैंने उन पर तेरा नाम प्रकट कर दिया है, और मैं उसे
इसलिए प्रकट करता रहूँगा ताकि जिस प्रेम से तूने मुझ से प्रेम
किया वह उनमें रहे, और मैं भी उनमें रहूँ।"

John 18:1

1 इन बातों को कहकर, यीशु अपने चेलों के साथ किद्रोन नाले
के पार चला गया, जहाँ एक वाटिका थी जिसमें उसने और
उसके चेलों ने प्रवेश किया।

2 अब यहूदा भी, जो उसे धोखा दे रहा था, उस स्थान को
जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ अक्सर
इकट्ठा हुआ करता था।

3 अतः प्रधान याजकों की ओर से तथा फरीसियों की ओर से
सैनिकों और अधिकारियों के जत्थे की अगुवाई करते हुए,
लालटेनों और मशालों और हथियारों के साथ यहूदा वहाँ आता
है।

4 तब यीशु ने, उन सारी बातों को जानते हुए, जो उसके साथ
घटित हो रही थीं, बाहर निकलकर उनसे पूछा, "तुम किसे
ढूँढ़ते हो?"

5 उन्होंने उसे उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।" वह उनसे
कहता, "मैं ही हूँ।" (अब यहूदा भी, जो उसे धोखा दे रहा था,
उनके साथ खड़ा हुआ था।)

6 अतः जब उसने उनसे कहा कि “मैं ही हूँ,” तो वे पीछे हट गए
और भूमि पर गिर पड़े।

7 तब फिर से उसने उनसे पूछा, “तुम किसे ढूँढ़ते हो?” और
उन्होंने कहा, “यीशु नासरी को।”

8 यीशु ने उत्तर दिया, “मैंने तुम को बता दिया कि मैं ही हूँ।
इसलिए यदि तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो, तो इनको जाने दो।”

9 ({यह इसलिए हुआ} ताकि वह वचन पूरा हो जो उसने कहा
था: “जिनको तूने मुझे दिया था, उनमें से मैंने एक को भी नहीं
खोया।”

10 तब शमौन पतरस ने, जिसके पास तलवार थी, उसे निकाला
और महायाजक के सेवक पर प्रहार किया और उसका
दाहिना कान काट डाला। अब उस सेवक का नाम मलखुस
था।

11 तब यीशु ने पतरस से कहा, “तलवार को वापस उसकी
म्यान में रख। क्या वह प्याला जो पिता ने मुझे दिया है, निश्चय
ही मुझे पीना नहीं चाहिए?”

12 तब सैनिकों और सूबेदार और यहूदियों के अधिकारियों के
जत्थे ने यीशु को पकड़ लिया और उसे बाँध दिया।

13 और वे उसे पहले हन्ना के पास ले गए, क्योंकि वह कैफा का
ससुर था, जो उस वर्ष का महायाजक था

14 (अब कैफा वही था जिसने यहूदियों को सुझाव दिया था कि
यह बेहतर होगा कि लोगों के लिए एक मनुष्य मरे।)

15 अब शमौन पतरस और एक अन्य चेला यीशु के पीछे-पीछे
गए। अब वह चेला महायाजक की जान-पहचान का था, और
उसने महायाजक के आँगन में यीशु के साथ प्रवेश किया।

16 परन्तु पतरस बाहर द्वार के पास खड़ा हुआ था, इसलिए वह
अन्य चेला, जो महायाजक की जान-पहचान का था, बाहर
गया और द्वारपालिन से बात की, और वह पतरस को भीतर
ले आया।

17 तब वह द्वारपालिन दासी, पतरस से कहती है, “क्या तू भी
इस मनुष्य के चेलों में से नहीं है?” वह कहता है, “मैं नहीं हूँ।”

18 (अब कोएले की आग जलाकर सेवक और अधिकारी भी
वहीं पर खड़े हुए थे, क्योंकि यह सर्दियों का समय था, और वे
स्वयं को गर्म कर रहे थे। परन्तु पतरस भी उनके साथ, वहाँ
खड़ा हुआ स्वयं का गर्म कर रहा था।

19 फिर महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के बारे में और
उसकी शिक्षा के बारे में पूछा।

20 यीशु ने उसे उत्तर दिया, “मैंने संसार से खुले रूप से बात
की है। मैंने हमेशा आराधनालय में और मंदिर में शिक्षा दी
जहाँ सारे यहूदी एक साथ आते थे, और मैंने कुछ भी गुप्त में
नहीं कहा।

21 तू मुझ से क्यों पूछता है? उनसे पूछ जिन्होंने वह सुना जो
मैंने उनसे कहा था। देख, जो मैंने कहा ये लोग जानते हैं।”

22 अब जब उसने इन बातों को बोला, तो वहाँ खड़े
अधिकारियों में से एक ने यीशु को यह कहकर थप्पड़ मारा,
“क्या तू महायाजक को इस तरीके से उत्तर देगा?”

23 यीशु ने उसे उत्तर दिया, “यदि मैंने गलत तरीके से कहा, तो
गलत के बारे में गवाही दे, परन्तु यदि सही तरीके से कहा, तो
तू मुझे क्यों मारता है?”

24 तब हन्ना ने उसे बंधा हुआ ही कैफा महायाजक के पास भेज
दिया।

25 अब शमौन पतरस भी खड़ा हुआ था और स्वयं का गर्म कर
रहा था। तब उन्होंने उससे कहा, “क्या तू भी उसके चेलों में से
नहीं है?” उसने इन्कार कर दिया और कहा, “मैं नहीं हूँ।”

26 महायाजक के सेवकों में से एक, जो उस मनुष्य का सम्बन्धी
थी {जिसका} कान पतरस ने काट डाला था, कहता है, “क्या
मैंने तुझे उसके साथ वाटिका में नहीं देखा था?”

27 तब पतरस ने फिर से इसका इन्कार किया, और तुरन्त ही
एक मुर्गे ने बाँग दी।

28 तब वे यीशु को कैफा के पास से राज्यपाल के किले में ले
गए। (अब यह सुबह में भोर का समय था, और उन्होंने
राज्यपाल के किले में इसलिए प्रवेश नहीं किया ताकि वे
अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें।)

29 अतः पिलातुस उनके पास बाहर निकल आया और कहता
है, "तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते हो?"

30 उन्होंने उत्तर दिया और उससे कहा, "यदि यह मनुष्य दुष्ट
काम करने वाला न होता, तो हम उसे तेरे हाथों में न सौंपते।"

31 इसलिए, पिलातुस ने उनसे कहा, "उसे तुम ही ले जाओ,
और तुम्हारी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करो।"
यहूदियों ने उससे कहा, "किसी भी मनुष्य की हत्या करना
हमारे लिए उचित नहीं है।"

32 (यह इसलिए हुआ ताकि यीशु का वह वचन पूरा हो जाए
जो उसने यह संकेत करने के लिए कहा था कि वह किस
प्रकार की मृत्यु से मरने वाला था।)

33 तब पिलातुस ने राज्यपाल के किले में फिर से प्रवेश किया
और यीशु को बुलाया और उससे कहा, "क्या तू यहूदियों का
राजा है?"

34 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तू यह अपनी ओर से कहता है, या
अन्यों ने तुझ से मेरे बारे में कहा है?"

35 पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैं तो यहूदी नहीं हूँ, क्या मैं हूँ? तेरी
अपनी जाति और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथों में सौंपा है।
तूने क्या किया है?"

36 यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है। यदि
मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते जिससे कि
मैं यहूदियों को सौंपा नहीं जाता। परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ
का नहीं है।"

37 तब पिलातुस ने उससे कहा, "तो फिर, क्या तू राजा है?"
यीशु ने उत्तर दिया, "तू ही कहता है कि मैं राजा हूँ। इसी
उद्देश्य के लिए मैंने जन्म लिया, और इसी उद्देश्य के लिए मैं
संसार में आया, ताकि मैं सत्य की गवाही दूँ। हर एक जन जो
सत्य का है वह मेरी वाणी को सुनता है।"

38 पिलातुस उससे कहता, "सत्य क्या है?" और यह कहकर,
वह फिर से यहूदियों के पास बाहर चला गया और उनसे
कहता है, "मुझे उसमें कोई दोष नहीं मिला।

39 परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं तुम्हारे लिए फसह के पर्व
में एक व्यक्ति को स्वतंत्र करूँ। इसलिए, क्या तुम चाहते हो
कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को स्वतंत्र करूँ?"

40 तब वे फिर से यह कहकर चिल्लाए, "इसे नहीं, परन्तु
बरअब्बा को।" (अब बरअब्बा एक डाकू था।)

John 19:1

1 इसलिए, फिर पिलातुस यीशु को ले गया और {उसे} कोड़े
लगवाए।

2 और सैनिकों ने काँटों से एक मुकुट गूँथ दिया। उन्होंने {उसे}
उसके सिर पर रख दिया और उसे एक बैंगनी वस्त्र पहना
दिया।

3 और वे उसके पास आ-आकर कह रहे थे, "यहूदियों के राजा
की, जय हो!" और वे उसे थप्पड़ मार रहे थे।

4 पिलातुस फिर से बाहर गया और उनसे कहता है, "देखो, मैं
उसे बाहर तुम्हारे पास ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मैं
उसमें कोई दोष नहीं पाता।"

5 फिर काँटों का मुकुट और बैंगनी वस्त्र पहने हुए, यीशु बाहर
निकल आया। और वह उनसे कहता है, "देखो, यह मनुष्य!"

6 अतः, जब प्रधान याजकों और अधिकारियों ने उसे देखा, तो
वे यह कहकर चिल्लाने लगे, "उसे क्रूस पर चढ़ा, उसे क्रूस पर
चढ़ा!" पिलातुस उनसे कहता है, "उसे तुम ही ले जाकर क्रूस
पर चढ़ा दो, क्योंकि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।"

7 यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, “हमारे पास व्यवस्था है, और
व्यवस्था के अनुसार उसे इसलिए मरना चाहिए, क्योंकि उसने
स्वयं को परमेश्वर का पुत्र बनाया था।”

8 इसलिए, जब पिलातुस ने इस बात को सुना, तो वह और भी
डर गया,

9 और उसने फिर से राज्यपाल के किले में प्रवेश किया और
यीशु से कहता है, “तू कहाँ से है?” परन्तु यीशु ने उसे कोई
उत्तर नहीं दिया।

10 इसलिए, पिलातुस उससे कहता है, “क्या तू मुझ से नहीं
बोलेगा? क्या तू जानता नहीं कि मेरे पास तुझे स्वतंत्र करने का
अधिकार है, और मेरे पास तुझे क्रूस पर चढ़ा देने का अधिकार
भी है?”

11 यीशु ने उसे उत्तर दिया, “ऊपर से जो तुझे दिया गया है,
उसके अलावा मुझ पर तेरा कोई अधिकार नहीं है। इसलिए,
जिसने मुझे तेरे हाथों में सौंपा है उसका पाप बढ़कर है।”

12 इस पर, पिलातुस उसे स्वतंत्र करने का प्रयास कर रहा था,
परन्तु यहूदी यह कहकर चिल्लाने लगे, “यदि तूने इसे स्वतंत्र
कर दिया, तो तू कैसर का मित्र नहीं। हर एक जन जो स्वयं को
राजा बनाता है वह कैसर के विरोध में बोलता है।”

13 इसलिए, इन बातों को सुनकर. पिलातुस यीशु को बाहर
लेकर आया और उस स्थान में न्याय आसन पर बैठ गया जो
“चबूतरा” कहलाता था, परन्तु इब्रानी भाषा में “गब्बता”
कहलाता था।

14 (अब यह फसह के पर्व की तैयारी का दिन था। यह लगभग
छठवाँ घंटा था।) और वह यहूदियों से कहता है, “देखो,
तुम्हारा राजा!”

15 परन्तु वे चिल्ला उठे, “{उसे} ले जा! {उसे} ले जा! उसे क्रूस
पर चढ़ा दे!” पिलातुस उनसे कहता है, “क्या तुम्हारे राजा को
मुझे क्रूस पर चढ़ाना चाहिए?” प्रधान याजकों ने उत्तर दिया,
“कैसर के अलावा हमारा कोई राजा नहीं है।”

16 इसलिए, फिर उसने उसे उनको सौंप दिया ताकि उसे क्रूस
पर चढ़ा दें, और यीशु को ले लिया {और} {उसे} लेकर चले
गए।

17 और वह स्वयं क्रूस उठाए हुए, उस {स्थान} को जाने के लिए
बाहर निकला, जो “खोपड़ी का स्थान” कहलाता है, जो इब्रानी
में “गुलगुता” कहलाता है।

18 वहाँ उन्होंने उसे, और उसके साथ दो अन्य मनुष्यों को क्रूस
पर चढ़ा दिया, एक इस तरफ और एक उस तरफ, और बीच
में यीशु।

19 अब पिलातुस ने एक शीर्षक भी लिखा और उसे क्रूस पर
लगा दिया। अब उस पर लिखा गया था: यीशु नासरी, यहूदियों
का राजा।

20 इसलिए, बहुत से यहूदियों ने इस शीर्षक को पढ़ा, क्योंकि
जिस स्थान में यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था वह नगर के
समीप ही था। और उसे इब्रानी में, लतीनी में, और यूनानी में
लिखा गया था।

21 इसलिए, यहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलातुस से कहा,
“‘यहूदियों का राजा’ नहीं, परन्तु बजाए इसके यह लिख कि,
‘इसने कहा था कि “मैं यहूदियों का राजा हूँ।”’”

22 पिलातुस ने उत्तर दिया, “जो मैंने लिख दिया मैंने लिख
दिया।”

23 फिर, जब सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, तो उन्होंने
उसके कपड़े लेकर उनको चार भागों में बाँट लिया—अर्थात
प्रत्येक सैनिक के लिए एक भाग—और कुर्ता भी। अब वह
कुर्ता निर्बाध, अर्थात ऊपर से एक टुकड़े में बुना हुआ था।

24 इसलिए, उन्होंने एक-दूसरे से कहा, “हमें इसे फाड़ना नहीं
चाहिए, परन्तु बजाए इसके हम इसके लिए चिट्ठियाँ डालनी
चाहिए कि यह किसका होगा।” यह इसलिए घटित हुआ ताकि
वह पवित्रशास्त्र पूरा हो जाए जो कहता है, “उन्होंने अपने बीच
में मेरे वस्त्रों को बाँट लिया और मेरे कपड़ों के लिए चिट्ठियाँ
डालीं।” इसी कारण से, सैनिकों ने ऐसा किया।

25 अब यीशु के क्रूस के बगल में उसकी माता, और उसकी
माता की बहन, क्लोपास की {पत्नी} मरियम, और मरियम
मगदलीनी खड़ी हुई थीं।

26 फिर यीशु {अपनी} माता और उस चेले को जिससे वह प्रेम
करता था पास खड़े देखकर, {अपनी} माता से कहता है, "हे
स्त्री, देख, तेरा पुत्र!"

27 फिर वह उस चेले से कहता है, "देख, तेरी माता!" और उसी
समय वह चेला उसे {अपने} {घर} ले गया।

28 इसके बाद, यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका है,
ताकि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो, यीशु कहता है, "मैं प्यासा
हूँ।"

29 वहाँ खट्टे दाखरस से भरा एक बर्तन रखा हुआ था, इसलिए
खट्टे दाखरस से भरे हुए पनसोख्ता को जूफा की लाठी पर
रखकर, उन्होंने उसे उसके मुँह की ओर उठा दिया।

30 इसलिए, जब यीशु ने वह खट्टा दाखरस लिया, तो उसने
कहा, "यह पूरा हो गया है।" और {अपना} सिर झुकाकर,
उसने {अपना} प्राण त्याग दिया।

31 फिर यहूदियों ने, क्योंकि वह तैयारी का दिन था, इस कारण
से कि सब्त के दिन में शव क्रूस पर न रहें (क्योंकि वह सब्त
का दिन विशेष रूप से महत्वपूर्ण दिन था), पिलातुस से विनती
की कि उनकी टाँगें तोड़ दे और उनको उतार दे।

32 इसलिए, सैनिकों ने आकर पहले व्यक्ति की और दूसरे
व्यक्ति की टाँगें तोड़ दीं जिनको उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया
गया था।

33 परन्तु यीशु के पास आकर, जब उन्होंने देखा कि वह तो
पहले से ही मर चुका था, तो उन्होंने उसकी टाँगें नहीं तोड़ीं।

34 हालाँकि, सैनिकों में से एक ने भाले से उसकी बगल में छेद
किया, और तुरन्त ही लहू और पानी बाहर निकल आया।

35 और जिसने यह देखा उसने गवाही दी, और उसकी गवाही
सच्ची है। और वह जानता है कि वह सच बोलता है ताकि तुम
भी विश्वास करो।

36 क्योंकि यह बातें इसलिए घटित हुईं कि पवित्रशास्त्र की
बात पूरी हो कि "उसकी कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जाएगी।"

37 और फिर से, एक अन्य पवित्रशास्त्र कहता है, "जिसे उन्होंने
छेदा वे उस पर दृष्टि करेंगे।"

38 अब इन बातों के बाद, यूसुफ ने, जो अरमतिया का रहने
वाला था, यीशु का चेला होने के नाते (परन्तु यहूदियों के डर
के कारण गुप्त रूप से), पिलातुस से विनती की कि वह यीशु
के शव को ले जाए। और पिलातुस ने उसे अनुमति दे दी।
इसलिए वह आकर शव को ले गया।

39 अब नीकुदेमुस भी—जो पहले रात के समय उसके पास
आया था—वजन में लगभग एक सौ लीटर, लोहबान और
एलवा का मिश्रण लेकर आया।

40 अतः उन्होंने यीशु का शव लेकर उसे मसालों के साथ सनी
के कपड़े में लपेट दिया, जैसा कि गाड़ने की तैयारी करने की
यहूदियों की रीति थी।

41 अब जिस स्थान में उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था वहाँ एक
वाटिका थी, और उस वाटिका में, एक नई कब्र थी जिसमें
किसी भी व्यक्ति को अभी तक गाड़ा नहीं गया था।

42 इसलिए, यहूदियों की तैयारी का दिन के कारण और
क्योंकि वह कब्र निकट ही थी, उन्होंने यीशु को उसमें रख
दिया।

John 20:1

1 अब सप्ताह के पहले दिन भोर में, जब अंधेरा ही था, मरियम
मगदलीनी कब्र पर आती है और कब्र पर से पत्थर को लुड़का
हुआ देखती है।

2 इसलिए, वह भागकर शमौन पतरस के पास और उस चेले
के पास आती है जिससे यीशु प्रेम करता था, और वह उनसे

कहती है, “वे प्रभु को कब्र में से निकाल कर ले गए, और हम
नहीं जानते कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।”

3 तब पतरस और अन्य चेला बाहर निकले, और वे कब्र की
ओर गए।

4 अब वे दोनों एक साथ भाग रहे थे, और अन्य चेला तेजी से
पतरस से आगे भागा और कब्र पर पहले पहुँचा।

5 और झुककर, वह सनी के कपड़े पड़े देखता है, परन्तु वह
भीतर नहीं गया।

6 फिर शमौन पतरस भी उसके बाद आया और कब्र के भीतर
प्रवेश किया। और वह वहाँ सनी के कपड़े पड़े देखता है

7 और वह कपड़ा जो उसके सिर पर था, वह सनी के कपड़ों
के साथ नहीं पड़ा था, परन्तु स्वयं से लपेटा हुआ एक स्थान पर
था।

8 इसलिए फिर अन्य चेला भी, जो कब्र पर पहले पहुँचा था,
भीतर गया, और उसने देखकर विश्वास किया।

9 क्योंकि उन्होंने अभी तक पवित्रशास्त्र को नहीं समझा था कि
मरे हुओं में से जी उठना उसके लिए आवश्यक था।

10 तब वे चेले फिर से {अपने घरों को} चले गए।

11 परन्तु मरियम कब्र के बाहर खड़ी हुई, रो रही थी। फिर जब
वह रो रही थी, तो उसने झुककर कब्र में देखा।

12 और वह दो स्वर्गदूतों को श्वेत वस्त्र पहने बैठे हुए देखती है,
एक को सिर के पास और एक को पाँवों के पास जहाँ यीशु के
शव को लिटाया गया था।

13 और वे उससे कहते हैं, “हे स्त्री, तू क्यों रो रही है?” वह उनसे
कहती है, “क्योंकि वे मेरे प्रभु को उठा ले गए, और मैं नहीं
जानती कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है।”

14 यह कहकर, वह पीछे मुड़ी और वहाँ यीशु को खड़े देखा,
और वह नहीं जानती थी कि वह यीशु था।

15 यीशु उससे कहता है, “हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू किसे
खोज रही है?” वह यह सोचकर कि वह माली है, उससे कहती
है, “हे महोदय, यदि तू ही उसे उठा ले गया है, तो मुझे बता कि
तूने उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी।”

16 यीशु उससे कहता है, “मरियम।” वह मुड़कर उससे इब्रानी
भाषा में कहती है, “रब्बूनी” (जिसका अर्थ “गुरु” है)।

17 यीशु उससे कहता है, “मुझे मत पकड़, क्योंकि मैं अभी तक
पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ; परन्तु मेरे भाइयों के पास जा
और उनको बता कि ‘मैं मेरे पिता तथा तुम्हारे पिता, और मेरे
परमेश्वर तथा तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।’”

18 मरियम मगदलीनी आकर, चेलों से बोली, “मैंने प्रभु को
देखा है,” और यह कि उसने उससे इन बातों को बोला था।

19 फिर, उस दिन शाम होने पर, जो सप्ताह का पहला दिन था,
और जहाँ चेले थे, वहाँ के द्वार यहूदियों के भय के कारण बंद
थे, तो यीशु आया और {उनके} बीच में खड़ा हो गया और
उनसे कहता है, “तुम को शान्ति मिले।”

20 और यह कहकर, उसने उनको {अपने} हाथ और {अपनी}
बगल दिखाई। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।

21 तब उसने फिर से चेलों से कहा, “तुम को शान्ति मिले। जैसे
पिता ने मुझे भेजा, वैसे ही मैं भी तुम को भेजता हूँ।”

22 और यह कहकर, उसने {उन} पर फूँका और उनसे कहता
है, “पवित्र आत्मा ग्रहण करो।

23 जिस किसी के पाप तुम क्षमा करो, तो वे उनके लिए क्षमा
कर दिए गए हैं; जिस किसी के {पाप} तुम बरकरार रखो, तो
वे बरकरार रखे गए हैं।”

24 परन्तु उन बारहों में से एक, थोमा, जो दिदुमुस कहलाता
था, जब यीशु आया तो उनके साथ नहीं था।

25 तब अन्य चेलों ने बाद में उससे कहा, “हम ने प्रभु को देखा
है।” परन्तु उसने उनसे कहा, “जब तक मैं उसके हाथों में
कीलों के निशान न देख लूँ, और उन कीलों के निशान में
अपनी उंगली न डाल लूँ, और उसकी बगल में अपना हाथ न
डाल लूँ, तब तक निश्चय ही मैं विश्वास नहीं करूँगा।”

26 और आठ दिनों के बाद उसके चेले फिर से भीतर थे, और
थोमा उनके साथ ही था। जब द्वार बंद थे तो यीशु आया, और
{उनके} बीच में खड़ा हो गया, और कहा, “तुम को शान्ति
मिले।”

27 फिर वह थोमा से कहता है, “अपनी उंगली यहाँ रख और
मेरे हाथों को देख। और अपना हाथ लेकर आ और उसे मेरी
बगल में डाल। और अविश्वासी नहीं, परन्तु विश्वासी बन।”

28 थोमा ने उत्तर दिया और उससे कहा, “हे मेरे प्रभु और हे
मेरे परमेश्वर।”

29 यीशु उससे कहता है, “क्योंकि तूने मुझे देखा, इसलिए तूने
विश्वास किया; धन्य हैं वे जिन्होंने नहीं देखा, और विश्वास
किया।”

30 फिर यीशु ने अपने चेलों की उपस्थिति में अन्य बहुत से
चिन्ह भी प्रकट किए, जिनको इस पुस्तक में लिखा नहीं गया
है,

31 परन्तु इन बातों को इसलिए लिखा गया है ताकि तुम विश्वास
करो कि यीशु ही मसीह, अर्थात परमेश्वर का पुत्र है, और
जिससे कि विश्वास करके, तुम उसके नाम में जीवन प्राप्त
करो।

John 21:1

1 इन बातों के बाद, तिबिरियास की झील के किनारे यीशु ने
स्वयं को चेलों पर फिर से प्रकट किया। अब उसने स्वयं को
इस तरीके से प्रकट किया:

2 शमौन पतरस, और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और
गलील के काना का रहने वाला नतनएल, और जब्दी के {पुत्र},
और उसके चेलों में से दो अन्य—वे एक साथ थे।

3 शमौन पतरस उनसे कहता है, “मैं मछली पकड़ने जा रहा
हूँ।” वे उससे कहते हैं, “हम भी तेरे साथ आ रहे हैं।” वे जाकर
नाव पर चढ़ गए, परन्तु पूरी में रात उन्होंने कुछ भी नहीं
पकड़ा।

4 अब, जब सुबह हो चुकी, तो यीशु तट पर खड़ा था, परन्तु
चेले नहीं जानते थे कि वह यीशु है।

5 फिर यीशु उनसे कहता है, “हे बच्चों, क्या तुम्हारे पास खाने
के लिए मछली नहीं है?” उन्होंने उसे उत्तर दिया, “नहीं।”

6 परन्तु उसने उनसे कहा, “जाल को नाव की दाहिनी तरफ
डालो, और तुम को कुछ तो मिलेगा।” इसलिए उन्होंने अपना
जाल डाला और बड़ी संख्या में मछलियाँ होने के कारण वे उसे
खींच पाने में सक्षम नहीं हुए।

7 तब वह चेला जिससे यीशु प्रेम करता था पतरस से कहता है,
“यह तो प्रभु है।” इसलिए, यह सुनकर कि वह प्रभु था, शमौन
पतरस ने {अपने} बाहरी वस्त्र पहने (क्योंकि वह बिना कपड़ों
के था), और झील में कूद गया।

8 परन्तु अन्य चेले मछलियों से भरे हुए जाल को खींचते हुए
नाव से ही आए (क्योंकि वे भूमि से दूर नहीं थे, परन्तु लगभग
200 हाथ दूर ही थे)।

9 फिर जब वे भूमि पर पहुँच गए, तो उन्होंने कोएले की आग
जली हुई, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।

10 यीशु उनसे कहता है, “उनमें से कुछ मछलियाँ ले आओ
जिनको तुम ने अभी पकड़ा है।”

11 इसलिए, शमौन पतरस ने जाकर जाल को भूमि पर खींच
लिया, जो 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था। परन्तु बहुत
सारी होने पर भी जाल फटा नहीं।

12 यीशु उनसे कहता है, “आओ, नाश्ता कर लो।” परन्तु चेलों
में से किसी ने भी उससे पूछने का साहस नहीं किया कि “तू
कौन है?” वे जानते थे कि वह प्रभु ही है।

13 यीशु आया और रोटी लेकर उनको दी, और उसी रीति से
मछली भी दी।

14 यह तीसरी बार {था} जब यीशु मरे हुओं में से जी उठने के
बाद चेलों पर प्रकट हुआ था।

15 तब जब उन्होंने नाश्ता कर लिया, तो यीशु शमौन पतरस से
कहता है, "हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनकी तुलना में मुझ
से अधिक प्रेम करता है?" वह उससे कहता है, "हाँ प्रभु, तू
जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" वह उससे कहता है,
"मेरे मेम्नों को चरा।"

16 वह फिर से उससे दूसरी बार कहता है, "हे शमौन यूहन्ना के
पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम करता है?" वह उससे कहता है, "हाँ, हे
प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" वह उससे
कहता है, "मेरी भेड़ों की रखवाली कर।"

17 वह उससे तीसरी बार कहता है, "हे शमौन यूहन्ना के पुत्र,
क्या तू मुझ से प्रेम करता है?" पतरस उदास हो गया क्योंकि
उसने उससे तीसरी बार कहा था कि "क्या तू मुझ से प्रेम
करता है?" और वह उससे कहता है, "हे प्रभु, तू तो सब बातें
जानता है; तू जानता है कि मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।" यीशु
उससे कहता है, "मेरी भेड़ों को चरा।

18 मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि जब तू जवान था, तू स्वयं
अपनी कमर बाँधता था और जहाँ जाना चाहता था वहाँ जाता
था, परन्तु जब तू बूढ़ा हो जाएगा, तो तू अपने हाथों को
बढ़ाएगा, और कोई अन्य व्यक्ति तेरी कमर बाँधेगा और तुझे
वहाँ लेकर जाएगा जहाँ तू जाना नहीं चाहेगा।"

19 अब उसने यह संकेत करते हुए कहा कि वह किस प्रकार
मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा। और यह कहकर, वह
उससे कहता है, "मेरे पीछे आ।"

20 पीछे घूमकर, पतरस उस चेले को उनके पीछे आते देखता
है जिससे यीशु प्रेम करता था, वही जिसने भोजन के समय
यीशु की छाती की ओर झुककर पूछा था कि "हे प्रभु, वह कौन
है जो तुझे धोखा दे रहा है?"

21 इसलिए, उसे देखकर, पतरस यीशु से कहता है, "परन्तु हे
प्रभु, इसका क्या होगा?"

22 यीशु उससे कहता है, "यदि मैं चाहूँ कि जब तक मैं न आऊँ
वह ठहरा रहे, तो {इससे} तुझे क्या काम? तू मेरे पीछे आ।"

23 अतः भाइयों के बीच में यह बात फैल गई, कि वह चेला
मरेगा नहीं। परन्तु यीशु ने उससे यह नहीं कहा था कि वह
मरेगा नहीं, परन्तु "यदि मैं चाहूँ कि जब तक मैं न आऊँ वह
ठहरा रहे, तो {इससे} तुझे क्या काम?"

24 यही वह चेला है जो इन बातों के बारे में गवाही देता है और
जिसने इन बातों को लिखा, और हम जानते हैं कि उसकी
गवाही सच्ची है।

25 अब ऐसे और भी बहुत से काम हैं जो यीशु ने किए थे, यदि
उनमें से हर एक को लिखा जाता, तो मैं कल्पना करता हूँ कि
इस संसार में भी उन पुस्तकों के लिए जो लिखी जातीं पर्याप्त
जगह नहीं होती।